36 सूरए यासीन ख़त्म

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 1:

आयत का अनुवाद:
"खुदा के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व:
□ व्याप्ति (Vyapti) और प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
इस आयत में दावा किया गया है कि ईश्वर (खुदा) बड़ा मेहरबान और अत्यधिक रहम वाला है।

□ हेतु (Reason):
ईश्वर की दयालुता सार्वभौमिक रूप से सत्य होनी चाहिए। परंतु धार्मिक ग्रंथों में ऐसे कई संदर्भ हैं जहाँ ईश्वर द्वारा कठोर दंड, नरक की धमकी और विनाशकारी परिणाम दिए गए हैं, जो पूर्ण दयालुता के विरुद्ध हैं।

□ उदाहरण (Example):

- **कुरान में ही (9:73) में कहा गया है कि "ऐ नबी! काफिरों और मुनाफिकों से जिहाद करो और उन पर सख़्ती करो।" यह कथन दयालुता और रहमत की परिभाषा के विपरीत है।**
- **भगवद गीता (4.7) में कहा गया है कि भगवान धर्म की रक्षा के लिए आते हैं, लेकिन किसी पर अत्याचार नहीं करते।**

□ उपनय (Application):
यदि ईश्वर सर्वथा दयालु होता, तो नरक, दंड और कठोरता का कोई स्थान नहीं होता। न्याय दर्शन में व्याप्ति सिद्धांत के अनुसार, किसी भी गुण का सार्वभौमिक रूप से लागू होना आवश्यक है, अन्यथा वह गुण सत्य नहीं माना जाता।

□ **निगमन (Conclusion):**
यह आयत अपने ही ग्रंथ की अन्य आयतों से विरोधाभासी है और न्याय दर्शन के व्याप्ति सिद्धांत का उल्लंघन करती है। यदि ईश्वर वास्तव में सर्वथा दयालु है, तो दंड और हिंसा का आदेश नहीं दिया जाना चाहिए।

आयत 2:

आयत का अनुवाद:
"इस पुरअज़ हिकमत कुरान की कसम।"

चुना गया न्याय तत्व:
□ **प्रमाण (Pramana) और अनुमिति (Anumana)**

विश्लेषण और आलोचना:

□ **प्रतिज्ञा (Proposition):**
यह आयत कुरान को "पूरा ज्ञान रखने वाला" और "हिकमत (बुद्धिमत्ता) से भरा हुआ" बताती है।

□ **हेतु (Reason):**
यदि कोई ग्रंथ ज्ञान से पूर्ण है, तो उसमें कोई भी त्रुटि, वैज्ञानिक गलती, या तार्किक विरोधाभास नहीं होना चाहिए। परंतु कुरान में कई वैज्ञानिक और तार्किक त्रुटियाँ पाई जाती हैं, जिससे यह दावा गलत सिद्ध होता है।

□ **उदाहरण (Example):**

- **सूरह 86:6-7 में कहा गया है कि वीर्य "रीढ़ की हड्डी और पसलियों के बीच से निकलता है," जबकि आधुनिक विज्ञान इसे गलत सिद्ध करता है।**
- **गीता (2.16) में कहा गया है कि "जो सत्य है, वह सदा रहेगा और जो असत्य है, वह अंततः नष्ट हो जाएगा।" इस सिद्धांत के अनुसार, सत्य कभी भी तार्किक विरोधाभास नहीं रखता, जबकि कुरान में कई ऐसे विरोधाभास मिलते हैं।**

□ **उपनय (Application):**
यदि कोई ग्रंथ ज्ञान से पूर्ण है, तो उसमें वैज्ञानिक और तार्किक सटीकता होनी चाहिए। परंतु न्याय दर्शन के

प्रमेय सिद्धांत के अनुसार, कोई भी ज्ञान स्रोत तब तक प्रमाणिक नहीं हो सकता जब तक वह प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द प्रमाण से सत्य सिद्ध न हो।

□ निगमन (Conclusion):
कुरान का पूर्ण ज्ञान से भरा होने का दावा न्याय दर्शन के प्रमेय और अनुमिति सिद्धांत के विरुद्ध जाता है। अतः यह आयत स्वयं में तर्कसंगत नहीं है।

आयत 3:

आयत का अनुवाद:
"ऐ रसूल, तुम बिलाशक यकीनी पैगंबरों में से हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
□ हेतु (Hetu) और प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि मुहम्मद निश्चित रूप से ईश्वर के पैगंबर हैं।

□ हेतु (Reason):
कोई भी दावा प्रमाण के बिना सत्य नहीं माना जा सकता। किसी व्यक्ति के पैगंबर होने का प्रमाण केवल उनकी व्यक्तिगत घोषणा पर आधारित नहीं हो सकता।

□ उदाहरण (Example):

- **न्याय दर्शन के अनुसार, प्रमाण चार प्रकार के होते हैं: प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, और शब्द।**
- **महाभारत में श्रीकृष्ण ने केवल चमत्कारों के माध्यम से नहीं, बल्कि अपने उपदेशों और कार्यों के आधार पर ईश्वरत्व सिद्ध किया।**
- **गीता (9.22) कहती है कि जो व्यक्ति सच्चे ज्ञान और कर्मयोग द्वारा ईश्वर को समझता है, वही वास्तविक दिव्यता को प्राप्त करता है। केवल स्वयं को पैगंबर घोषित करने से कोई व्यक्ति दिव्य नहीं बन जाता।**

□ उपनय (Application):
यदि कोई व्यक्ति केवल अपने शब्दों के आधार पर ईश्वर का पैगंबर हो सकता है, तो फिर किसी भी व्यक्ति को यह दावा करने से नहीं रोका जा सकता।

□ निगमन (Conclusion):
यह आयत बिना किसी ठोस प्रमाण के मुहम्मद के पैगंबर होने की घोषणा करती है, जो न्याय दर्शन के प्रमाण सिद्धांत का उल्लंघन करता है।

आयत 4-5:

आयत का अनुवाद:
"और दीन के बिल्कुल सीधे रास्ते पर *(साबित क़दम)* हो। *(5)* जो बड़े मेहरबान *(और)* ग़ालिब *(ख़ुदा)* का नाजिल किया हुआ *(है)*।"

चुना गया न्याय तत्व:
□ व्याप्ति (Vyapti) और अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
इस आयत में कहा गया है कि इस्लाम ही "सीधा रास्ता" है और इसे स्वयं ईश्वर ने प्रकट किया है।

□ हेतु (Reason):
यदि कोई मार्ग वास्तव में "सीधा" और सार्वभौमिक है, तो वह सभी समय, स्थान और समाजों में स्वीकार्य होना चाहिए। परंतु कुरान में कई आदेश ऐसे हैं जो आज के नैतिक मानकों से मेल नहीं खाते।

□ उदाहरण (Example):

- **कुरान (4:34) में पुरुषों को महिलाओं पर प्रभुत्व की अनुमति दी गई है, जो आधुनिक समानता सिद्धांत के विरुद्ध है।**
- **न्याय दर्शन में व्याप्ति का सिद्धांत कहता है कि कोई भी सार्वभौमिक सत्य सभी परिस्थितियों में लागू होना चाहिए। लेकिन यदि कोई सिद्धांत समय और समाज के अनुसार बदलता है, तो वह सार्वभौमिक नहीं कहा जा सकता।**

□ **उपनय (Application):**
यदि कुरान का मार्ग पूर्ण रूप से सीधा होता, तो उसमें नैतिक और तार्किक विरोधाभास नहीं होते।

□ **निगमन (Conclusion):**
यह आयत न्याय दर्शन के व्याप्ति सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह दावा करती है कि केवल इस्लाम ही सही मार्ग है, जबकि इसके कई सिद्धांत सार्वभौमिक नैतिकता से मेल नहीं खाते।

सारांश तालिका:

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
1	**व्याप्ति, प्रमाण**	**ईश्वर की दयालुता सार्वभौमिक नहीं, क्योंकि कुरान में दंड और कठोरता है।**
2	**प्रमाण, अनुमिति**	**कुरान के ज्ञान का पूर्ण और तार्किक होना प्रमाणित नहीं।**
3	**प्रमाण, हेतु**	**मुहम्मद के पैगंबर होने का दावा प्रमाण रहित है।**
4-5	**व्याप्ति, अनुमान**	**"सीधा मार्ग" सार्वभौमिक नहीं, क्योंकि इसमें नैतिक विरोधाभास हैं।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में न्याय दर्शन के प्रमाण, व्याप्ति और अनुमान सिद्धांतों का उल्लंघन किया गया है। अतः इन्हें सार्वभौमिक सत्य नहीं माना जा सकता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 6:

आयत का अनुवाद:
"ताकि तुम उन लोगों को (अज़ाबे खुदा से) डराओ जिनके बाप-दादा (तुमसे पहले किसी पैग़म्बर से) डराए नहीं गए।"

चुना गया न्याय तत्व:

** हेतु (Hetu) और प्रमाण (Pramana)**

विश्लेषण और आलोचना:

** प्रतिज्ञा (Proposition):**
इस आयत में कहा गया है कि मुहम्मद उन लोगों को डराने आए हैं जिनके पूर्वज किसी पैगंबर द्वारा डराए नहीं गए।

** हेतु (Reason):**
यदि कोई सत्य सार्वभौमिक है, तो वह भय या धमकी के बिना भी स्वीकार किया जा सकता है। परंतु यहाँ धर्म को प्रचारित करने का तरीका डराने पर आधारित है, जो न्याय दर्शन के "तर्कसंगत प्रमाण" (यथार्थ प्रमाण) सिद्धांत के विरुद्ध है।

** उदाहरण (Example):**

- **भगवद गीता (2.47) में कहा गया है कि "कर्म करो, लेकिन फल की चिंता मत करो," जो भय-मुक्त आध्यात्मिकता को प्रोत्साहित करता है।**
- **न्याय दर्शन में सत्य को प्रमाणों (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, और शब्द) के आधार पर स्थापित किया जाता है, न कि डर के द्वारा।**

** उपनय (Application):**
सत्य वही होता है जिसे तर्क और प्रमाणों से स्थापित किया जा सके, न कि भय दिखाकर।

** निगमन (Conclusion):**
यह आयत धार्मिक प्रचार के लिए भय का उपयोग करती है, जो न्याय दर्शन के तर्कसंगत प्रमाण (Pramana) सिद्धांत के विरुद्ध है।

आयत 7:

आयत का अनुवाद:
"तो वह दीन से बिल्कुल बेख़बर हैं, उनमें अक्सर तो *(अज़ाब की)* बातें यकीनन बिल्कुल ठीक पूरी उतरी हैं, ये लोग तो ईमान लाएँगे नहीं। "

चुना गया न्याय तत्व:

□ अनुमान (Anumana) और व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
यहाँ दावा किया गया है कि कुछ लोग "ईमान लाएँगे नहीं" क्योंकि उन पर "अज़ाब की बातें" पूरी तरह लागू हो चुकी हैं।

□ हेतु (Reason):
यदि पहले से यह तय है कि कुछ लोग ईमान नहीं लाएँगे, तो फिर उन्हें सत्य बताने या डराने का कोई औचित्य नहीं बनता। यह कथन "पूर्वनिर्धारण" (Predestination) के सिद्धांत को स्थापित करता है, जो न्याय दर्शन के स्वतंत्र इच्छा (स्वतंत्र कर्म सिद्धांत) के विरुद्ध जाता है।

□ उदाहरण (Example):

- **गीता (18.63) में श्रीकृष्ण अर्जुन को स्वयं निर्णय लेने की स्वतंत्रता देते हैं: *"अब तुम अपने विवेक से विचार कर, जो उचित लगे, वह करो।"***
- **न्याय दर्शन के अनुसार, हर व्यक्ति का ज्ञान और कर्म उसे सत्य तक पहुँचाने का साधन होता है। यदि पहले से ही किसी का निर्णय तय हो, तो यह सिद्धांत निरर्थक हो जाता है।**

□ उपनय (Application):
यदि पहले से ही तय है कि कुछ लोग ईमान नहीं लाएँगे, तो उन्हें दंडित करना अन्यायपूर्ण होगा और यह मानव स्वतंत्रता के विरुद्ध जाएगा।

□ निगमन (Conclusion):
यह आयत न्याय दर्शन के स्वतंत्र कर्म और विवेक सिद्धांत का उल्लंघन करती है और एक अनुचित पूर्वनिर्धारण को बढ़ावा देती है।

आयत 8:

आयत का अनुवाद:
"हमने उनकी गर्दनों में (भारी-भारी लोहे के) तौक़ डाल दिए हैं और ठुड्डियों तक पहुँचे हुए हैं कि वह गर्दनें उठाए हुए हैं (सर झुका नहीं सकते)।"

चुना गया न्याय तत्व:

□ उपमान (Upamana) और प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
यहाँ कहा गया है कि कुछ लोगों की गर्दनों में जंजीरें डाल दी गई हैं ताकि वे सर झुका न सकें।

□ हेतु (Reason):
यदि किसी को जबरदस्ती मार्ग से रोक दिया जाए, तो यह उसके कर्म और स्वतंत्र इच्छा (Free Will) के विपरीत होगा। न्याय दर्शन के अनुसार, सभी को सत्य की खोज की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

□ उदाहरण (Example):

- **उपनिषदों में कहा गया है "सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म", अर्थात सत्य, ज्ञान और अनंतता का अनुभव स्वतंत्र खोज से प्राप्त होता है।**
- **भगवद गीता (3.35) में कहा गया है कि "अपने स्वधर्म का पालन करना ही श्रेष्ठ है, भले ही वह कठिन क्यों न हो।"**

□ उपनय (Application):
यदि किसी को पहले से ही बंधनों में डाल दिया गया है, तो फिर उसे न्यायोचित रूप से परखा नहीं जा सकता।

□ निगमन (Conclusion):
यह आयत मानव स्वतंत्रता के सिद्धांत और न्याय दर्शन के "ज्ञान स्वतंत्रता" (Knowledge Autonomy) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है।

आयत 9:

आयत का अनुवाद:
"हमने एक दीवार उनके आगे बना दी है और एक दीवार उनके पीछे, फिर ऊपर से उनको ढाँक दिया है, तो वह कुछ देख नहीं सकते।"

चुना गया न्याय तत्व:

□ व्याप्ति (Vyapti) और अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
यहाँ कहा गया है कि कुछ लोगों को ईश्वर ने "बंद" कर दिया है, जिससे वे सत्य को देख नहीं सकते।

□ हेतु (Reason):
यदि कोई व्यक्ति सत्य को देख ही नहीं सकता, तो फिर उसे दंडित करना अन्याय होगा।

□ उदाहरण (Example):

- **न्याय दर्शन में कहा गया है कि ज्ञान का स्रोत प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द प्रमाण होता है। यदि किसी को ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता ही नहीं दी गई, तो वह सत्य तक कैसे पहुँचेगा?**
- **गीता (4.11) में कहा गया है कि "जो जिस रूप में मेरी शरण लेता है, मैं उसे उसी रूप में स्वीकार करता हूँ।" यह व्यक्ति की स्वतंत्र खोज की बात करता है।**

□ उपनय (Application):
यदि किसी को सत्य से वंचित कर दिया गया है, तो उसे ईमान न लाने के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता।

□ निगमन (Conclusion):
यह आयत न्याय दर्शन के ज्ञान सिद्धांत (Epistemology) के विरुद्ध है।

आयत 10:

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) उनके लिए बराबर है, ख़्वाह तुम उन्हें डराओ या न डराओ, ये (कभी) ईमान लाने वाले नहीं हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

□ अनुमान (Anumana) और प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
यहाँ कहा गया है कि कुछ लोग कभी भी ईमान नहीं लाएँगे, चाहे कुछ भी किया जाए।

□ हेतु (Reason):
यह कथन "पूर्वनिर्धारण" (Predestination) को मान्यता देता है, जो न्याय दर्शन के "कर्म सिद्धांत" (Karma Theory) से मेल नहीं खाता।

□ उदाहरण (Example):

- **गीता (9.32) में कहा गया है कि सभी व्यक्ति, चाहे वे किसी भी वर्ग, जाति या लिंग के हों, भगवान की शरण में आ सकते हैं।**
- **न्याय दर्शन के अनुसार, सभी को स्वतंत्रता और ज्ञान प्राप्त करने का अवसर दिया जाना चाहिए।**

□ निगमन (Conclusion):
यह आयत स्वतंत्र इच्छा और कर्म सिद्धांत के विरुद्ध जाती है।

सारांश तालिका:

आयत संख्या	चुना गया न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
6	**हेतु, प्रमाण**	**धर्म को डराने के माध्यम से प्रचारित किया गया है।**
7	**अनुमान, व्याप्ति**	**पूर्वनिर्धारण (Predestination) स्वतंत्र इच्छा का उल्लंघन करता है।**
8	**उपमान, प्रमाण**	**स्वतंत्र इच्छा को नकारा गया है।**
9	**व्याप्ति, अनुमान**	**सत्य को देखने की क्षमता न देने पर दंड अन्यायपूर्ण होगा।**

10	**अनुमान, प्रमाण**	**कर्म सिद्धांत के विरुद्ध पूर्वनिर्धारण को बढ़ावा देता है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में न्याय दर्शन के ज्ञान, स्वतंत्रता और कर्म सिद्धांतों का उल्लंघन किया गया है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 11:

आयत का अनुवादः
"तुम तो बस उसी शख़्स को डरा सकते हो जो नसीहत माने और बेदेखे-भाले खुदा का ख़ौफ़ रखे, तो तुम उसको (गुनाहों की) माफी और एक बाइज़्ज़त (व आबरू) अज्र की खुशख़बरी दे दो।"

चुना गया न्याय तत्वः

□ हेतु (Hetu) और प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
यहाँ कहा गया है कि केवल वे ही लोग नसीहत मान सकते हैं जो बिना देखे हुए ईश्वर से डरते हैं।

□ हेतु (Reason):
यदि किसी को सत्य स्वीकार करने के लिए भय का सहारा लेना पड़े, तो यह सत्य के सार्वभौमिक और स्वतः सिद्ध होने के विरुद्ध जाता है। न्याय दर्शन में ज्ञान को प्रत्यक्ष अनुभव, तर्क और प्रमाणों द्वारा सत्यापित किया जाता है, न कि भय से।

□ उदाहरण (Example):

- **भगवद गीता (2.56): "जो व्यक्ति सुख-दुःख में समान रहता है और भय व क्रोध से मुक्त रहता है, वही स्थिर बुद्धि वाला होता है।"**

- **न्याय दर्शन में प्रमाण (Pramana) के चार साधन होते हैं: प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द। बिना देखे या तर्क किए किसी पर विश्वास करना ज्ञान की प्रक्रिया के विरुद्ध है।**

उपनय (Application):
यदि किसी धर्म का आधार केवल अंधविश्वास और भय है, तो वह न्याय दर्शन के तर्कसंगत प्रमाणों के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत न्याय दर्शन के "तर्कसंगत प्रमाण" (Logical Pramana) **के सिद्धांत का उल्लंघन करती है और केवल भय को ज्ञान प्राप्ति का साधन बनाती है।**

आयत 12:

आयत का अनुवाद:
"हम ही यकीनन मुर्दों को जिंदा करते हैं और जो कुछ लोग पहले कर चुके हैं (उनको) और उनकी (अच्छी या बुरी बाक़ी माँदा) निशानियों को लिखते जाते हैं और हमने हर चीज़ को एक सरीह व रौशन पेशवा में घेर दिया है।"

चुना गया न्याय तत्व:

अनुमान (Anumana) और व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यहाँ दावा किया गया है कि ईश्वर लोगों के कर्मों को लिखता है और प्रत्येक चीज़ को नियंत्रित करता है।

हेतु (Reason):
यदि प्रत्येक कर्म पहले से ही लिख दिया गया है, तो व्यक्ति के स्वयं के प्रयासों का क्या महत्व रहेगा? यह कथन स्वतंत्र कर्म सिद्धांत के विरुद्ध जाता है।

उदाहरण (Example):

- **भगवद गीता (18.63): *"अब तुम अपने विवेक से विचार कर, जो उचित लगे, वह करो।"***

- **न्याय दर्शन के अनुसार: प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का निर्माता होता है। यदि सब पहले से तय हो, तो कर्म का कोई मूल्य नहीं रहेगा।**

उपनय (Application):
यदि सभी घटनाएँ पहले से लिखी हुई हैं, तो फिर व्यक्ति को अच्छा या बुरा कहकर दंडित या पुरस्कृत करना अन्याय होगा।

निगमन (Conclusion):
यह आयत न्याय दर्शन के "स्वतंत्र कर्म सिद्धांत" (Karma & Free Will) के विरुद्ध जाती है।

आयत 13:

आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) तुम (इनसे) मिसाल के तौर पर एक गाँव (अता किया) वालों का किस्सा बयान करो जब वहाँ (हमारे) पैग़म्बर आए।"

चुना गया न्याय तत्व:

उपमान (Upamana) और प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यहाँ एक उदाहरण देकर यह बताया गया है कि ईश्वर के पैग़ंबर गाँव में भेजे गए।

हेतु (Reason):
यदि धर्म सार्वभौमिक सत्य होता, तो किसी एक विशेष गाँव या समूह को ही पैग़ंबर भेजने की आवश्यकता नहीं होती।

उदाहरण (Example):

- **उपनिषदों में कहा गया है: "सर्वं खल्विदं ब्रह्म", अर्थात ब्रह्म सर्वत्र व्याप्त है।**
- **न्याय दर्शन में प्रमाण का महत्त्व: यदि कोई बात सत्य है, तो उसे किसी उदाहरण या विशेष समुदाय तक सीमित नहीं होना चाहिए।**

□ उपनय (Application):
यदि किसी धर्म का प्रचार केवल सीमित स्थानों पर हुआ, तो यह ईश्वर की सर्वव्यापकता के सिद्धांत के विरुद्ध जाता है।

□ निगमन (Conclusion):
यह आयत सार्वभौमिक सत्य के सिद्धांत और न्याय दर्शन के "तर्क द्वारा प्रमाण" (Logical Pramana) का उल्लंघन करती है।

आयत 14:

आयत का अनुवाद:
"इस तरह कि जब हमने उनके पास दो (पैग़ंबर योहना और यूनुस) भेजे तो उन लोगों ने दोनों को झुठलाया, जब हमने एक तीसरे (पैग़ंबर शमऊन) से (उन दोनों को) मदद दी तो इन तीनों ने कहा कि हम तुम्हारे पास खुदा के भेजे हुए (आए) हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

□ अनुमान (Anumana) और व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
यहाँ दावा किया गया है कि तीन पैग़ंबर भेजे गए थे, लेकिन लोगों ने उन्हें झुठला दिया।

□ हेतु (Reason):
यदि कोई ईश्वरीय संदेश सत्य होता, तो उसे तर्क और प्रमाण द्वारा सिद्ध किया जा सकता था। पैग़ंबरों को भेजकर लोगों को जबरदस्ती ईमान लाने के लिए बाध्य करना तर्कसंगत नहीं है।

□ उदाहरण (Example):

- **न्याय दर्शन के अनुसार: सत्य को किसी व्यक्ति या दूत के माध्यम से नहीं, बल्कि ज्ञान, तर्क और प्रमाणों से सिद्ध किया जाता है।**
- **गीता (4.34): "ज्ञानियों के पास जाकर श्रद्धा और विनम्रता से प्रश्न करो, वे तुम्हें ज्ञान प्रदान करेंगे।"**

□ उपनय (Application):
यदि कोई धर्म तर्क द्वारा नहीं, बल्कि किसी विशेष दूत द्वारा ही समझाया जा सकता है, तो वह न्याय दर्शन के प्रमाण सिद्धांत के विरुद्ध होगा।

□ निगमन (Conclusion):
यह आयत सत्य की स्वतंत्र खोज के सिद्धांत का उल्लंघन करती है।

आयत 15:

आयत का अनुवाद:
"वह लोग कहने लगे कि तुम लोग भी तो बस हमारे ही जैसे आदमी हो और खुदा ने कुछ नाज़िल (वाज़िल) नहीं किया है, तुम सब के सब बिल्कुल झूठे हो।"

चुना गया न्याय तत्व:

□ हेतु (Hetu) और अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
यहाँ उन लोगों का तर्क दिया गया है जो पैग़ंबरों को स्वीकार नहीं कर रहे थे।

□ हेतु (Reason):
यदि पैग़ंबर भी साधारण मनुष्य ही थे, तो उनका संदेश विशेष क्यों माना जाए? सत्य को प्रमाण द्वारा सिद्ध होना चाहिए, न कि किसी विशेष व्यक्ति की बात मानकर।

□ उदाहरण (Example):

- **गीता (2.16): "जो असत्य है, उसका अस्तित्व नहीं होता, और जो सत्य है, उसका कभी नाश नहीं होता।"**
- **न्याय दर्शन के अनुसार: किसी भी कथन को प्रमाण द्वारा सिद्ध किया जाना चाहिए, केवल किसी व्यक्ति की विशेष स्थिति के कारण उसे स्वीकार नहीं किया जा सकता।**

निगमन (Conclusion):
यह आयत सत्य की तर्कसंगत खोज के विरुद्ध है और केवल पैग़ंबरों के कथनों को प्रमाण मानने को बढ़ावा देती है।

सारांश तालिका:

आयत	न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
11	**हेतु, प्रमाण**	**सत्य को भय के माध्यम से स्वीकार करवाना तर्कसंगत नहीं है।**
12	**अनुमान, व्याप्ति**	**यदि सब पहले से तय है, तो कर्म सिद्धांत निरर्थक हो जाता है।**
13	**उपमान, प्रमाण**	**सत्य केवल विशेष स्थानों तक सीमित नहीं हो सकता।**
14	**अनुमान, व्याप्ति**	**सत्य तर्क द्वारा प्रमाणित होना चाहिए, न कि किसी विशेष व्यक्ति के माध्यम से।**
15	**हेतु, अनुमान**	**सत्य को तर्क और प्रमाण से सिद्ध किया जाना चाहिए।**

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 16:

आयत का अनुवाद:
"तब उन पैग़म्बरों ने कहा हमारा परवरदिगार जानता है कि हम यकीनन उसी के भेजे हुए *(आए)* हैं और *(*तुम मानो या न मानो*)*।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana) और हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
यहाँ यह दावा किया जा रहा है कि पैग़ंबरों को ईश्वर ने भेजा है और यह बात केवल ईश्वर जानता है।

□ हेतु (Reason):
सत्य को केवल आस्था के आधार पर स्वीकार करना न्याय दर्शन के "प्रमाण" (valid means of knowledge) के सिद्धांत के विरुद्ध है। सत्य को प्रत्यक्ष अनुभव, तर्क और प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया जाना चाहिए, न कि केवल यह कहकर कि "ईश्वर जानता है।"

□ उदाहरण (Example):

- **न्याय दर्शन में प्रमाण के चार साधन होते हैं: प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द। इस आयत में कोई प्रमाण नहीं दिया गया है, केवल दावा किया गया है।**
- **गीता (9.2):** ***"यह ज्ञान प्रत्यक्ष अनुभव से प्राप्त होता है और धर्म के अनुरूप है।"***

□ उपनय (Application):
यदि कोई भी व्यक्ति यह कहे कि "ईश्वर जानता है कि मैं सही हूँ," तो यह तर्कहीन हो जाएगा।

□ निगमन (Conclusion):
यह आयत सत्य की तर्कसंगत खोज के विरुद्ध जाती है और केवल अंधविश्वास को बढ़ावा देती है।

आयत 17:

आयत का अनुवाद:
"हम पर तो बस खुल्लम-खुल्ला एहकामे खुदा का पहुँचा देना फर्ज़ है।"

चुना गया न्याय तत्व:

□ व्याप्ति (Vyapti) और अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
यहाँ दावा किया गया है कि पैग़ंबरों का काम केवल ईश्वर का आदेश पहुँचाना है।

□ हेतु (Reason):
यदि पैग़ंबर केवल संदेशवाहक हैं और उनका कोई तर्कसंगत उत्तरदायित्व नहीं है, तो उनके संदेश को सत्य मानने का कोई आधार नहीं बचता।

□ उदाहरण (Example):

- भगवद गीता (2.50): "कर्म में कुशलता ही योग है।" यहाँ व्यक्ति के कर्मों को प्राथमिकता दी गई है, न कि किसी संदेश को आँख मूँदकर मानने को।
- न्याय दर्शन के अनुसार: ज्ञान की मान्यता का आधार उसके तर्क और प्रमाण होने चाहिए, केवल यह कहना कि "मुझे आदेश दिया गया" पर्याप्त नहीं है।

□ उपनय (Application):
यदि कोई व्यक्ति केवल यह कहे कि "मैं संदेशवाहक हूँ, इसलिए मेरी बात मानो," तो यह तर्कसंगत नहीं होगा।

□ निगमन (Conclusion):
यह आयत स्वतंत्र तर्क और विवेक के स्थान पर केवल अंधविश्वास को बढ़ावा देती है।

आयत 18:

आयत का अनुवाद:
"वह बोले, हमने तुम लोगों को बहुत नहस क़दम पाया (कि तुम्हारे आते ही क़हत में मुब्तिला हुए), तो अगर तुम (अपनी बातों से) बाज़ न आओगे तो हम लोग तुम्हें ज़रूर संगसार कर देंगे और तुमको यकीनन हमारा दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा।"

चुना गया न्याय तत्व:

□ हेतु (Hetu) और हेतु-अभास (Hetvabhasa - Logical Fallacy)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
यहाँ पैग़ंबरों के आगमन को बुरी किस्मत से जोड़ा गया है और उन्हें पत्थरों से मारने की धमकी दी गई है।

□ **हेतु (Reason):**
इस आयत में "तर्क का भ्रम" (Hetvabhasa) है, जिसे "असम्बद्ध कारण" (Post hoc fallacy) कहा जाता है – किसी घटना को बिना प्रमाण के किसी अन्य घटना से जोड़ देना।

□ **उदाहरण (Example):**

- **न्याय दर्शन में कहा गया है: कोई भी निष्कर्ष बिना तर्क और प्रमाण के नहीं निकाला जा सकता।**
- **गीता (16.23):** ***"जो शास्त्र के विरुद्ध आचरण करता है, वह न सुख को प्राप्त करता है, न सिद्धि को, और न ही परम गति को।"***

□ **उपनय (Application):**
किसी भी घटना का कारण खोजने के लिए न्याय दर्शन में "अनुमान" (Anumana) और "व्याप्ति" (Vyapti) का प्रयोग किया जाता है। यहाँ इनका अभाव है।

□ **निगमन (Conclusion):**
यह आयत तर्कहीन निष्कर्ष निकालने की ओर प्रवृत्त करती है और अंधविश्वास को बढ़ावा देती है।

आयत 19:

आयत का अनुवाद:
"पैग़म्बरों ने कहा कि तुम्हारी बदशुगूनी (तुम्हारी करनी से) तुम्हारे साथ है, क्या जब नसीहत की जाती है (तो तुम उसे बदफ़ाली कहते हो? नहीं, बल्कि तुम खुद (अपनी) हद से बढ़ गए हो।"

चुना गया न्याय तत्व:

□ **व्याप्ति (Vyapti) और उपमान (Upamana)**

विश्लेषण और आलोचना:

□ **प्रतिज्ञा (Proposition):**
यहाँ यह कहा जा रहा है कि जो लोग पैग़ंबरों की बात नहीं मानते, वे सीमाएँ लाँघ चुके हैं।

□ **हेतु (Reason):**
यदि कोई व्यक्ति किसी बात को नहीं मानता, तो इसका अर्थ यह नहीं कि वह हद से बढ़ गया। सत्य को तर्क से प्रमाणित किया जाना चाहिए, न कि केवल दूसरों को गलत ठहराकर।

▯ उदाहरण (Example):

- **न्याय दर्शन के अनुसार: सत्य का निर्धारण तर्क से किया जाता है, न कि केवल यह कहकर कि "तुम गलत हो।"**
- **गीता (3.35): "अपने धर्म का पालन करना श्रेष्ठ है, भले ही वह दोषयुक्त क्यों न हो।"**

▯ उपनय (Application):
किसी भी सिद्धांत को केवल यह कहकर प्रमाणित नहीं किया जा सकता कि "जो इसे नहीं मानता, वह गलत है।"

▯ निगमन (Conclusion):
यह आयत तर्कहीन निष्कर्ष निकालने को बढ़ावा देती है और न्याय दर्शन के ज्ञान-मीमांसा (Epistemology) सिद्धांत के विरुद्ध जाती है।

सारांश तालिका:

आयत	न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
16	**प्रमाण, हेतु**	**सत्य को प्रमाण से नहीं, केवल विश्वास से स्वीकारने को कहता है।**
17	**व्याप्ति, अनुमान**	**केवल "संदेशवाहक" होने का दावा सत्य का प्रमाण नहीं हो सकता।**
18	**हेतु, हेतु-अभास**	**असम्बद्ध कारण (Post hoc fallacy) का दोष, तर्कहीन निष्कर्ष।**
19	**व्याप्ति, उपमान**	**जो सत्य को नहीं मानता, उसे हद से बढ़ा हुआ कहना तर्कहीन है।**

अंतिम निष्कर्ष:

इन आयतों में मुख्य रूप से तर्कहीन निष्कर्ष, अंधविश्वास और केवल पैग़ंबरों के कथनों को प्रमाण मानने की प्रवृत्ति देखी जाती है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी बात को सत्य मानने के लिए उसे तर्क और प्रमाण द्वारा सिद्ध किया जाना चाहिए, न कि केवल "ईश्वर जानता है" कहकर।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 21:

आयत का अनुवाद:
*"***ऐसे लोगों का** *(ज़रूर)* **कहना मानो जो तुमसे** *(***तबलीग़े रिसालत की***)* **कुछ मज़दूरी नहीं माँगते और वह लोग हिदायत याफ़्ता भी हैं।** *"*

चुना गया न्याय तत्व:

▯ हेतु (Reason) और हेतु-अभास (Logical Fallacy - Hetvabhasa)

विश्लेषण और आलोचना:

▯ प्रतिज्ञा (Proposition):
यहाँ कहा गया है कि उन्हीं लोगों की बात माननी चाहिए जो कोई मेहनताना नहीं माँगते और जो "सही रास्ते पर" हैं।

▯ हेतु (Reason):

- **किसी की सच्चाई इस आधार पर तय नहीं की जा सकती कि वह पैसा माँगता है या नहीं। सत्य और असत्य को पहचानने का आधार तर्क, प्रमाण और न्यायिक विवेक होना चाहिए।**
- **यहाँ "तबलीग़ करने वालों को पैसे नहीं चाहिए" को सत्यता का प्रमाण बना दिया गया है, जो हेत्वाभास** *(Logical Fallacy)* **है।**

▯ उदाहरण (Example):

- **न्याय दर्शन के अनुसार: सत्य की मान्यता "प्रत्यक्ष"** (Pratyaksha) **और "अनुमान"** (Anumana) **द्वारा होती है, न कि किसी की निःस्वार्थता से।**
- **भगवद गीता (2.16):** *"***असत्य का अस्तित्व नहीं होता, और सत्य का कभी अभाव नहीं होता।** *"***सत्य का निर्धारण तर्क से किया जाता है, न कि व्यक्ति की नीयत से।**

□ उपनय (Application):
अगर यह तर्क मान लिया जाए कि जो पैसे नहीं लेता, वही सत्य बोल रहा है, तो कई झूठे लोग भी इसे अपने पक्ष में प्रयोग कर सकते हैं।

□ निगमन (Conclusion):
यह तर्कसंगत नहीं है कि किसी का सत्य इस आधार पर स्वीकार कर लिया जाए कि वह निःस्वार्थ भाव से कार्य कर रहा है।

आयत 22:

आयत का अनुवाद:
"और मुझे क्या (ख़ब्त) हुआ है कि जिसने मुझे पैदा किया है, उसकी इबादत न करूँ, हालाँकि तुम सब के बस (आख़िर) उसी की तरफ़ लौटकर जाओगे?"

चुना गया न्याय तत्व:

□ अनुमान (Anumana) और व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
इस आयत में यह कहा गया है कि जिसने पैदा किया है, केवल उसकी ही उपासना की जानी चाहिए।

□ हेतु (Reason):

- **यह तर्क "निर्माता-उपासक संबंध" पर आधारित है, जो न्याय दर्शन के अनुसार प्रमाणिक नहीं है।**
- **किसी वस्तु का निर्माता आवश्यक रूप से उसका आराध्य नहीं होता। उदाहरण के लिए, मनुष्य एक घड़ी बनाता है, लेकिन घड़ी का कर्तव्य नहीं कि वह मनुष्य की पूजा करे।**

□ उदाहरण (Example):

- **वैशेषिक दर्शन में कहा गया है: *"कार्य-कारण संबंध से किसी वस्तु की उपासना आवश्यक नहीं होती।"***
- **भगवद गीता (3.19): *"कर्म करो, लेकिन फल की इच्छा मत रखो।"* यहाँ कर्ता और उपासना का संबंध नहीं बताया गया है।**

□ उपनय (Application):
अगर यह तर्क स्वीकार कर लिया जाए, तो प्रत्येक व्यक्ति को अपने माता-पिता, शिक्षक, और अन्य जीवनदाता की भी पूजा करनी चाहिए, जो कि इस्लामी सिद्धांतों के विपरीत होगा।

□ निगमन (Conclusion):
निर्माण और उपासना का कोई अनिवार्य संबंध नहीं है। यह तर्क न्याय दर्शन की व्याप्ति *(invariable concomitance)* के सिद्धांत का उल्लंघन करता है।

आयत 23:

आयत का अनुवाद:
"क्या मैं उसे छोड़कर दूसरों को माबूद बना लूँ? अगर खुदा मुझे कोई तकलीफ पहुँचाना चाहे तो न उनकी सिफारिश ही मेरे कुछ काम आएगी और न ये लोग मुझे (इस मुसीबत से) छुड़ा ही सकेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:

□ अनुमान (Anumana) और हेतु-अभास (Logical Fallacy - Hetvabhasa)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
इस आयत में कहा गया है कि यदि ईश्वर नुकसान पहुँचाना चाहे, तो कोई अन्य देवता मदद नहीं कर सकते।

□ हेतु (Reason):

- **यह तर्क "एकमात्र शक्ति"** (Monopoly of Power) **पर आधारित है, जो हेत्वाभास** (Fallacy of False Dilemma) **का उदाहरण है।**
- **यह मान लेना कि केवल एक शक्ति ही सर्वशक्तिमान हो सकती है, अन्य संभावनाओं को नकार देता है।**

□ उदाहरण (Example):

- **सांख्य दर्शन में प्रकृति और पुरुष दोनों को स्वतंत्र सत्ता माना गया है।**
- **भगवद गीता (4.11):** ***"जो जिस भाव से मेरी शरण में आता है, मैं उसे उसी प्रकार स्वीकार करता हूँ।"*** **अर्थात्, सत्य को विविध दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है।**

□ उपनय (Application):
यदि यह तर्क स्वीकार कर लिया जाए कि केवल एक ही शक्ति सर्वशक्तिमान है, तो यह अन्य संभावनाओं को नकार देता है, जो तर्कहीन है।

□ निगमन (Conclusion):
यह तर्क न्याय दर्शन के बहुविध कारणों के सिद्धांत का उल्लंघन करता है और केवल एक ही संभावना को अनिवार्य बनाता है।

आयत 24:

आयत का अनुवाद:
"अगर ऐसा करूँ तो उस वक्त मैं यकीनी सरीही गुमराही में हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:

□ व्याप्ति (Vyapti) और हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
जो एक ईश्वर को नहीं मानता, वह भटकाव में है।

□ हेतु (Reason):

- **यह तर्क सत्य की विविधता को अस्वीकार करता है।**
- **यदि केवल एक ही मत सत्य हो सकता है, तो अन्य धर्मों का क्या स्थान होगा?**

□ उदाहरण (Example):

- **उपनिषदों में कहा गया है: "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" (सब कुछ ब्रह्म है)।**
- **न्याय दर्शन के अनुसार: सत्य को अनुभव, तर्क और प्रमाण से सिद्ध किया जाता है।**

□ उपनय (Application):
यदि केवल एक ही मत सही हो, तो बाकी सभी को झूठा मानना होगा, जो तार्किक नहीं है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत तार्किक विविधता को नकारती है और न्याय दर्शन के तर्क के बहुलवाद (Pluralism of Logic) सिद्धांत के विरुद्ध जाती है।

सारांश तालिका:

आयत	न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
21	**हेतु, हेतु-अभास**	**किसी की सच्चाई को पैसे न लेने के आधार पर मानना तर्कहीन है।**
22	**अनुमान, व्याप्ति**	**निर्माण और उपासना का कोई आवश्यक संबंध नहीं होता।**
23	**अनुमान, हेतु-अभास**	**केवल एक शक्ति को अनिवार्य रूप से सर्वशक्तिमान मानना तार्किक नहीं है।**
24	**व्याप्ति, हेतु**	**सत्य की विविधता को अस्वीकार करना न्याय दर्शन के विरुद्ध है।**

अंतिम निष्कर्ष:

इन आयतों में मुख्य रूप से तर्कहीन निष्कर्ष, सत्य को एक ही दिशा में सीमित करने की प्रवृत्ति और बहुसत्यवादी दृष्टिकोण को अस्वीकार करने की प्रवृत्ति देखी जाती है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी सत्य को तर्क, अनुभव और प्रमाण के आधार पर स्वीकार किया जाना चाहिए, न कि केवल आस्था के आधार पर।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 26-27:

आयत का अनुवाद:
"तब उसे खुदा का हुक्म हुआ कि बेहिश्त में जा (उस वक्त भी उसको कौम का ख्याल आया तो कहा) मेरे

परवरदिगार ने जो मुझे बख़्श दिया और मुझे बुज़ुर्ग लोगों में शामिल कर दिया काश इसको मेरी कौम के लोग जान लेते और ईमान लाते।"

चुना गया न्याय तत्व:

अनुमान (Anumana) और उपमान (Upamana - Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
इस आयत में कहा गया है कि एक व्यक्ति को जन्नत में भेज दिया गया और उसने यह इच्छा जताई कि काश उसकी कौम को भी यह पता चलता।

हेतु (Reason):

- **इस कथन में "जन्नत का प्रत्यक्ष अनुभव" करने वाले व्यक्ति का जिक्र है, लेकिन जन्नत का अस्तित्व स्वयं प्रमाणित नहीं किया गया।**
- **यह मान लिया गया है कि जन्नत एक वास्तविक स्थान है और वहां पहुंचने की सूचना प्राप्त व्यक्ति को हुई, लेकिन इसका न्याय दर्शन के प्रत्यक्ष *(Pratyaksha)* या अनुमान *(Anumana)* प्रमाणों से समर्थन नहीं मिलता।**

उदाहरण (Example):

- **न्याय दर्शन में ज्ञान के चार प्रमाण माने गए हैं: प्रत्यक्ष** (Direct Perception), **अनुमान** (Inference), **उपमान** (Comparison), **और शब्द** (Testimony)**।**
- **भगवद गीता (2.27): "जो जन्मा है उसकी मृत्यु निश्चित है और जो मरा है उसका पुनर्जन्म निश्चित है।"**
    - **यहाँ पुनर्जन्म की बात कही गई है, लेकिन जन्नत का कहीं प्रमाण नहीं मिलता।**

उपनय (Application):
यदि कोई भी व्यक्ति मरकर जन्नत पहुँच जाता है और फिर उसकी इच्छा होती है कि अन्य लोग भी इसे जानें, तो यह केवल एक कल्पना पर आधारित है, न कि तर्क पर।

निगमन (Conclusion):
जन्नत का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं दिया गया, बल्कि इसे एक स्वयंसिद्ध सत्य मानकर प्रस्तुत किया गया है, जो न्याय दर्शन की अनुमान विधि के विपरीत है।

आयत 28-29:

आयत का अनुवाद:
"और हमने उसके मरने के बाद उसकी क़ौम पर उनकी तबाही के लिए न तो आसमान से कोई लशकर उतारा और न हम कभी इतनी सी बात के वास्ते लशकर उतारने वाले थे। वह तो सिर्फ एक चिंघाड़ थी (जो कर दी गई बस) फिर तो वह फौरन चिराग़े सहरी की तरह बुझ के रह गए।"

चुना गया न्याय तत्व:

□ व्याप्ति (Vyapti) और हेतु-अभास (Hetvabhasa - Logical Fallacy)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
इस आयत में कहा गया है कि कौम पर तबाही बिना किसी लशकर के सिर्फ एक चिंघाड़ (शब्द) के माध्यम से लाई गई।

□ हेतु (Reason):

- **यह कथन एक अनिर्वचनीय कारण *(Arbitrary Causation)* को स्वीकार करता है, जहाँ "चिंघाड़" को नष्ट करने का साधन मान लिया गया।**
- **न्याय दर्शन में कारण और परिणाम का निश्चित संबंध होता है (व्याप्ति सिद्धांत), लेकिन यहाँ इसका उल्लंघन किया गया।**

□ उदाहरण (Example):

- **वैशेषिक दर्शन (कारण-कार्य सिद्धांत): "कोई भी कार्य बिना उपयुक्त कारण के नहीं हो सकता।"**
- **भगवद गीता (4.17): "कर्मों के रहस्य को केवल गहन ज्ञान से समझा जा सकता है।"**
  - **यहाँ स्पष्ट कारण और परिणाम का संबंध बताया गया है, जबकि इस्लामी तर्क में इसे रहस्य बना दिया गया।**

□ उपनय (Application):
अगर केवल "आवाज़" से कोई सभ्यता नष्ट हो सकती है, तो इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार होना चाहिए, लेकिन ऐसा कोई प्रमाण नहीं दिया गया।

□ **निगमन (Conclusion):**
यह तर्क हेत्वाभास (Fallacy of Arbitrary Causation) को दर्शाता है, जहाँ बिना किसी ठोस कारण के परिणाम घोषित किया गया।

आयत 30:

आयत का अनुवाद:
"हाए अफ़सोस बंदों के हाल पर कि कभी उनके पास कोई रसूल नहीं आया मगर उन लोगों ने उसके साथ मसख़रापन ज़रूर किया।"

चुना गया न्याय तत्व:

□ **प्रत्यक्ष (Pratyaksha) और शब्द प्रमाण (Shabda Pramana)**

विश्लेषण और आलोचना:

□ **प्रतिज्ञा (Proposition):**
इस आयत में कहा गया कि हर पैग़ंबर को मज़ाक उड़ाने का सामना करना पड़ा।

□ **हेतु (Reason):**

- **यह कथन एक सामान्यीकरण दोष *(Overgeneralization Fallacy)* को दर्शाता है।**
- **यह मान लेना कि हर पैग़ंबर का अपमान हुआ, एक तर्कहीन निष्कर्ष है क्योंकि यह प्रमाण पर आधारित नहीं है।**

□ **उदाहरण (Example):**

- **ऋग्वेद (10.191.2): "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।"**
  - **यह कहता है कि ज्ञान का आदान-प्रदान समाज में मान्यता पाता है, जबकि इस्लाम इसे केवल उपेक्षा का पात्र मानता है।**
- **न्याय दर्शन में शब्द प्रमाण: किसी बात को केवल "कहा गया है" के आधार पर सत्य नहीं माना जा सकता, जब तक कि उसे प्रमाणित न किया जाए।**

□ **उपनय (Application):**
यदि सभी नबियों का मज़ाक उड़ाया गया होता, तो किसी भी धर्म को मान्यता नहीं मिलती।

□ **निगमन (Conclusion):**
यह कथन सामान्यीकरण दोष *(Hasty Generalization)* से ग्रसित है और न्याय दर्शन के प्रमाण सिद्धांत के विपरीत है।

सारांश तालिका:

आयत	न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
26-27	**अनुमान, उपमान**	**जन्नत को बिना प्रमाण के सत्य मान लेना तर्कसंगत नहीं है।**
28-29	**व्याप्ति, हेतु-अभास**	**केवल "आवाज़" से सभ्यता नष्ट होने का कोई तर्कसंगत प्रमाण नहीं है।**
30	**प्रत्यक्ष, शब्द प्रमाण**	**हर नबी का मज़ाक उड़ाया गया, यह बिना प्रमाण का सामान्यीकरण है।**

अंतिम निष्कर्ष:

इन आयतों में मुख्य रूप से अतार्किक निष्कर्ष, कारण और प्रभाव का असंगत संबंध, और बिना प्रमाण के सामान्यीकरण की प्रवृत्ति देखी जाती है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी सत्य को प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुमान और तर्क के आधार पर स्वीकार किया जाना चाहिए, न कि केवल आस्था के आधार पर।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 31-32:

आयत का अनुवाद:
"क्या उन लोगों ने इतना भी ग़ौर नहीं किया कि हमने उनसे पहले कितनी उम्मतों को हलाक कर डाला और वह लोग उनके पास हरगिज़ पलट कर नहीं आ सकते। *(हाँ)* अलबत्ता सब के सब इकट्ठा होकर हमारी बारगाह में हाजिर किए जाएँगे। *"*

चुना गया न्याय तत्व:

□ हेतु-अभास (Hetvabhasa - Logical Fallacy) और अनुमान (Anumana - Inference)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):
इस आयत में कहा गया है कि पहले कई समुदायों को नष्ट कर दिया गया और वे फिर वापस नहीं आ सकते, लेकिन बाद में सभी को अल्लाह के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा।

□ हेतु (Reason):

- **यदि कोई समुदाय पूरी तरह नष्ट हो गया है और वे वापस नहीं आ सकते, तो फिर उन्हें "इकट्ठा" करने का क्या अर्थ है?**
- **यह कथन आत्मविरोधी *(Self-Contradiction)* है, क्योंकि पहले कहा गया कि वे लौट नहीं सकते और फिर कहा गया कि वे अल्लाह के समक्ष हाजिर किए जाएँगे।**

□ उदाहरण (Example):

- **न्याय दर्शन का अनुमान सिद्धांत: अनुमान तब तक प्रमाणिक नहीं होता जब तक कि उसके पीछे एक सुनिश्चित तर्क न हो।**
- **भगवद गीता (2.22):** ***"जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नए धारण करता है, वैसे ही आत्मा पुराने शरीर को त्यागकर नया प्राप्त करती है।"***
    - **यहाँ पुनर्जन्म का सिद्धांत है, जबकि इस्लामी दृष्टिकोण में पुनर्जन्म को नकारकर केवल "पुनर्जीवन (Resurrection)" की बात की जाती है, जिसका कोई प्रमाण नहीं।**

□ उपनय (Application):
यदि न्याय दर्शन के तर्क से देखें, तो यदि आत्मा पुनर्जन्म नहीं लेती और मृत शरीर पुनर्जीवित नहीं होता, तो यह कथन अनिश्चित अनुमान पर आधारित है।

□ निगमन (Conclusion):
यह कथन हेत्वाभास (Logical Fallacy) और आत्मविरोधी है क्योंकि पहले न लौटने की बात कही गई और फिर दोबारा इकट्ठा करने की।

आयत 33-35:

आयत का अनुवाद:

"और उनके (समझने) के लिए मेरी कुदरत की एक निशानी मुर्दा (परती) ज़मीन है कि हमने उसको (पानी से) जिंदा कर दिया और हम ही ने उससे दाना निकाला तो उसे ये लोग खाया करते हैं। और हम ही ने ज़मीन में छुहारों और अंगूरों के बाग़ लगाए और हम ही ने उसमें पानी के चश्मे जारी किए। ताकि लोग उनके फल खाएँ और कुछ उनके हाथों ने उसे नहीं बनाया (बल्कि खुदा ने) तो क्या ये लोग (इस पर भी) शुक्र नहीं करते?"

चुना गया न्याय तत्व:

** उपमान (Upamana - Comparison) और प्रत्यक्ष (Pratyaksha - Direct Perception)**

विश्लेषण और आलोचना:

** प्रतिज्ञा (Proposition):**

इस आयत में कहा गया है कि अल्लाह ही परती भूमि को पुनर्जीवित करता है, अन्न उपजाता है, और लोगों को फल देता है।

** हेतु (Reason):**

- **यह कथन कर्तृत्व का एकमात्र अधिकार केवल अल्लाह को देने का दावा करता है, लेकिन इसके पीछे कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण नहीं है।**
- **भूमि में उर्वरता जल, सूर्य और मिट्टी के पोषक तत्वों के कारण आती है, जो प्राकृतिक नियमों के अंतर्गत कार्य करते हैं।**

** उदाहरण (Example):**

- **वैशेषिक दर्शन: "हर कार्य का एक निश्चित कारण होता है। यदि बीज, जल और मिट्टी में उचित संतुलन होगा तो अन्न उपजेगा।"**
- **ऋग्वेद (10.117.6): "पृथ्वी, सूर्य और जल के संयोग से अन्न उत्पन्न होता है, जिससे सभी प्राणी जीवित रहते हैं।"**
    - **इस्लामी दृष्टिकोण में केवल ईश्वर को कारण बताया गया है, जबकि हिंदू दृष्टिकोण में प्रकृति के कार्य-कारण संबंध को महत्व दिया गया है।**

उपनय (Application):
यदि न्याय दर्शन की दृष्टि से देखें, तो भूमि की उर्वरता स्वाभाविक प्रक्रियाओं के कारण होती है न कि किसी विशेष सत्ता के हस्तक्षेप से।

निगमन (Conclusion):
यह कथन अव्याप्ति दोष *(Non-Correlation Fallacy)* से ग्रस्त है, क्योंकि यह प्राकृतिक घटनाओं को बिना प्रमाण किसी देवता के अधीन मानता है।

सारांश तालिका:

आयत	न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
31-32	**हेतु-अभास, अनुमान**	**पहले कहा कि नष्ट समुदाय वापस नहीं आ सकते, फिर कहा कि वे इकट्ठा होंगे, यह आत्मविरोधी है।**
33-35	**उपमान, प्रत्यक्ष**	**प्राकृतिक घटनाओं को बिना वैज्ञानिक प्रमाण केवल ईश्वर का कार्य मानना तार्किक रूप से अस्वीकार्य है।**

अंतिम निष्कर्ष:

इन आयतों में मुख्य रूप से तर्कहीन सामान्यीकरण, आत्मविरोधी निष्कर्ष, और प्राकृतिक घटनाओं को बिना वैज्ञानिक आधार केवल ईश्वर की देन मानने की प्रवृत्ति देखी जाती है। न्याय दर्शन के अनुसार कोई भी सत्य प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुमान और तर्क के आधार पर स्वीकार किया जाना चाहिए, न कि केवल धार्मिक विश्वास के आधार पर।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 36:

आयत का अनुवाद:

"वह (हर ऐब से) पाक साफ़ है जिसने ज़मीन से उगने वाली चीज़ों और खुद उन लोगों के और उन चीज़ों के जिनकी उन्हें ख़बर नहीं, सबके जोड़े पैदा किए।"

चुना गया न्याय तत्व:

□ व्याप्ति (Vyapti - Invariable Concomitance) और हेतु-अभास (Hetvabhasa - Logical Fallacy)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):

इस आयत में कहा गया है कि अल्लाह ने प्रत्येक वस्तु को जोड़ों में बनाया है, चाहे वे वनस्पतियाँ हों, मनुष्य हों, या अज्ञात चीज़ें।

□ हेतु (Reason):

- **यह कथन व्याप्ति दोष से ग्रस्त है, क्योंकि यह यह मानता है कि सभी चीज़ें जोड़ों में होती हैं, जबकि विज्ञान में कई जीव और वस्तुएँ बिना जोड़े के भी पाई जाती हैं।**
- **एकल लैंगिक (Asexual) प्रजनन करने वाले जीवों का क्या?**
- **प्रकाश, ऊर्जा, गुरुत्वाकर्षण, समय जैसी भौतिक चीज़ों के "जोड़े" कहाँ हैं?**

□ उदाहरण (Example):

- **वैशेषिक दर्शन: पदार्थों की पाँच अवस्थाएँ मानी गई हैं - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश, जिनमें जोड़े का कोई सिद्धांत नहीं।**
- **भगवद गीता (10.20): "अहं आत्मा गुडाकेश सर्वभूताशय स्थितः।"**
  - **आत्मा को अव्यक्त (बिना किसी जोड़े का) बताया गया है, जबकि आयत में "हर चीज़ जोड़े में है" कहा गया।**

□ उपनय (Application):

यह सिद्धांत कि हर चीज़ जोड़े में है, वैज्ञानिक रूप से सत्य नहीं है और न्याय दर्शन की दृष्टि से सर्वग्राह्यता *(Universal Correlation)* दोष उत्पन्न करता है।

□ निगमन (Conclusion):

इस कथन में व्याप्ति दोष और अनुपयुक्त सामान्यीकरण (Improper Generalization) का दोष है।

आयत 37-40:

आयत का अनुवाद:

"और मेरी क़ुदरत की एक निशानी रात है जिससे हम दिन को खींच कर निकाल लेते (जाहिर कर देते) हैं तो उस वक्त ये लोग अंधेरे में रह जाते हैं। और (एक निशानी) आफताब है जो अपने एक ठिकाने पर चल रहा है ये (सबसे) ग़ालिब वाक़िफ़ (ख़ुदा) का (बाधा हुआ) अंदाज़ा है। और हमने चाँद के लिए मंज़िलें मुक़र्रर कर दी हैं यहाँ तक कि हिर फिर के (आखिर माह में) खजूर की पुरानी टहनी का सा (पतला टेढ़ा) हो जाता है। न तो आफताब ही से ये बन पड़ता है कि वह माहताब को जा ले और न रात ही दिन से आगे बढ़ सकती है (चाँद, सूरज, सितारे) हर एक अपने-अपने आसमान (मदार) में चक्कर लगा रहें हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

□ अनुमान (Anumana - Inference) और प्रत्यक्ष (Pratyaksha - Direct Perception)

विश्लेषण और आलोचना:

□ प्रतिज्ञा (Proposition):

इस आयत में यह कहा गया है कि सूरज और चाँद अपने-अपने मार्ग पर चलते हैं और एक दूसरे से आगे नहीं बढ़ सकते।

□ हेतु (Reason):

- **यह कथन तथ्यात्मक त्रुटि (Factual Error) से भरा है, क्योंकि सूरज स्थिर नहीं, बल्कि आकाशगंगा में घूम रहा है।**
- **भौतिकी के अनुसार:**
  - **दिन और रात "खींचकर अलग करने" की क्रिया नहीं, बल्कि पृथ्वी के घूर्णन (Rotation) के कारण होती है।**
  - **सूरज और चाँद एक-दूसरे से स्वतंत्र हैं, चंद्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है, जबकि सूरज आकाशगंगा के केंद्र के चारों ओर परिक्रमा करता है।**

□ उदाहरण (Example):

- **सांख्य दर्शन: प्रकृति (प्रकृति) के तीन गुण - सत्व, रजस, तमस - से सृष्टि संचालित होती है, न कि किसी ईश्वरीय शक्ति से।**

- **ऋग्वेद (10.149.1):** *"सूर्य और चंद्रमा अपने मार्ग में स्थित हैं, जिन्हें ऋत (सार्वभौमिक नियम) नियंत्रित करता है।"*
    - **यहाँ किसी अलौकिक सत्ता के बजाय प्राकृतिक नियमों को कारण माना गया है।**

□ उपनय (Application):
यदि न्याय दर्शन से देखें, तो इस आयत का कथन प्रत्यक्ष प्रमाण *(Pratyaksha Pramana)* के विरुद्ध है, क्योंकि दिन-रात पृथ्वी की गति से होते हैं न कि किसी ईश्वर की खींचने की प्रक्रिया से।

□ निगमन (Conclusion):
यह कथन वैज्ञानिक दृष्टि से गलत है क्योंकि सूरज और चंद्रमा के "स्थिर मार्ग" का विचार भौतिकी के नियमों के विरुद्ध है।

सारांश तालिका:

आयत	न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
36	**व्याप्ति, हेतु-अभास**	**"हर चीज़ जोड़े में है" कहना गलत है, क्योंकि कई चीज़ें जोड़े में नहीं होतीं।**
37-40	**अनुमान, प्रत्यक्ष**	**सूरज और चाँद की गति का वर्णन वैज्ञानिक रूप से गलत है; दिन-रात पृथ्वी के घूर्णन से होते हैं।**

अंतिम निष्कर्ष:

इन आयतों में वैज्ञानिक त्रुटियाँ, व्याप्ति दोष, और तथ्यात्मक गलतियाँ पाई जाती हैं। न्याय दर्शन के अनुसार सत्य केवल प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुमान और तर्क के आधार पर स्वीकार किया जाना चाहिए, न कि केवल धार्मिक विश्वास पर।

आयत 41
आयत का अनुवाद:
"और उनके लिए (मेरी कुदरत) की एक निशानी ये है कि उनके बुज़ुर्गों को (नूह की) भरी हुयी कश्ती में सवार किया।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह दावा किया गया है कि नूह की कश्ती एक निशानी है।**
- **हेतु (Reason): यह दावा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एक विशिष्ट उदाहरण देता है, जिसमें नूह की कश्ती के माध्यम से भगवान की शक्ति और मेहरबानी का प्रमाण बताया जाता है।**
- **उदाहरण (Example): ऐतिहासिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, नूह की कश्ती और उस समय के पानी में डूबने का विवरण बहुत ही संदिग्ध और बिना किसी ठोस प्रमाण के है। विभिन्न प्राचीन सभ्यताओं में भी बाढ़ की कथाएँ मिलती हैं, लेकिन इस प्रकार के विवरण वैज्ञानिक दृष्टि से अनुपयुक्त हैं।**
- **उपणय (Application): भारतीय दर्शन, विशेषकर वैषेशिक दर्शन में, कोई भी घटना या चिन्ह तब तक प्रमाणित नहीं मानी जाती जब तक उसका अनुभवजन्य प्रमाण न हो। इसके बिना, इस प्रकार के बयान साक्ष्य के बिना केवल विश्वास के आधार पर होते हैं, जो सार्वभौमिक रूप से मान्य नहीं हो सकते।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत न्याय दर्शन के प्रमेय (ज्ञान के स्रोत) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह ऐतिहासिक और अनुभवजन्य साक्ष्य के बिना दावा करती है।**

आयत 42
आयत का अनुवाद:
"और उस कशती के मिसल उन लोगों के वास्ते भी वह चीज़े (कश्तियाँ) जहाज़ पैदा कर दी।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्यास (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यहाँ यह दावा किया गया है कि नूह की कश्ती की तरह ही अन्य लोग भी जहाज़ पर सवार हो सकते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क बहुत सामान्य है और कोई ठोस प्रमाण प्रस्तुत नहीं करता। यह दावा केवल कश्ती की मिसाल को लेकर किया गया है, बिना यह साबित किए कि यह हर किसी के लिए सच्चाई है।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेषकर न्याय दर्शन में, यह आवश्यक होता है कि कोई घटना जो सामान्य नियम के रूप में पेश की जाए, उसके लिए पर्याप्त प्रमाण और उदाहरण उपलब्ध हों। केवल एक विशिष्ट घटना (जैसे नूह की कश्ती) से सामान्यीकरण करना, बिना प्रमाण के, अनुपयुक्त माना जाता है।**
- **उपणय (Application): जैसे न्याय दर्शन में उदाहरण और सामान्यीकरण के लिए व्याप्ति का नियम है, जिसमें सभी मामलों में समानता का आधार साबित करना होता है। यहाँ यह साबित नहीं किया गया कि हर कश्ती या जहाज़ ईश्वर की विशेष कृति है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि एक विशेष उदाहरण से सामान्यीकरण करना बिना साक्ष्य के गलत है।**

आयत 43

आयत का अनुवाद:

"अगर हम चाहें तो उन सब लोगों को डुबा मारें फिर न कोई उनका फरियाद रस होगा और न वह लोग छुटकारा ही पा सकते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर का दावा है कि वह चाहें तो किसी भी समूह को डुबो सकता है।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क प्रदान करता है कि ईश्वर का इच्छा और शक्ति अनन्त है, और वह अपनी इच्छा से किसी भी समूह का नाश कर सकता है। यह तर्क ईश्वर की सर्वशक्तिमानता को प्रस्तुत करता है, लेकिन यह बिना किसी तार्किक या नैतिक आधार के है।**
- **उदाहरण (Example): गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है (अध्याय 4, श्लोक 11), "जैसा मनुष्य मुझे भक्ति करता है, वैसे ही मैं उसे फल देता हूँ।" यहाँ भगवान का कार्य केवल अच्छे कर्म करने वालों को ही प्रोत्साहित करने वाला है, न कि बिना कारण किसी को नष्ट करने वाला।**
- **उपणय (Application): इस आयत का तर्क न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता, क्योंकि यह ईश्वर के निर्णय को पक्षपाती और तर्कहीन मानता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत न्याय दर्शन के सिद्धांत के विपरीत है, जो निष्पक्षता और न्याय की आवश्यकता को स्वीकार करता है।**

आयत 44

आयत का अनुवाद:

"मगर हमारी मेहरबानी से और चूँकि एक (ख़ास) वक्त तक (उनको) चैन करने देना (मंज़ूर) है।"

चुना गया न्याय तत्व:

उदाहरण (Udaharana)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): ईश्वर की मेहरबानी से एक निश्चित समय तक लोगों को चैन दिया जाता है।
- हेतु (Reason): यह आयत ईश्वर की मेहरबानी और समयबद्धता को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह बिना किसी तार्किक आधार के केवल एक दया का दावा करती है।
- उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में यह आवश्यक होता है कि किसी भी दया या समयबद्धता को वास्तविकता और प्रमाण के साथ प्रस्तुत किया जाए, न कि केवल एक रूपक के रूप में।
- उपणय (Application): भारतीय दर्शन में जैसे कर्म और परिणाम का सिद्धांत है, उसी प्रकार यह विचार गलत है क्योंकि यह केवल बिना प्रमाण के दया की अवधारणा पर आधारित है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत न्याय दर्शन और भारतीय दर्शन की तार्किकता के खिलाफ है, जो प्रमाणों और स्पष्ट कारणों के आधार पर दया और न्याय को मान्यता देता है।

आयत 45

आयत का अनुवाद:

"और जब उन काफ़िरों से कहा जाता है कि इस (अज़ाब से) बचो (हर वक्त तुम्हारे साथ-साथ) तुम्हारे सामने और तुम्हारे पीछे (मौजूद) है ताकि तुम पर रहम किया जाए।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि काफ़िरों को रहम करने के लिए चेतावनियाँ दी जाती हैं।
- हेतु (Reason): यह तर्क बताता है कि चेतावनियों का उद्देश्य काफ़िरों को सुधारने का है, लेकिन यह केवल अनुमान और विश्वास के आधार पर है, जिसमें किसी प्रकार का ठोस प्रमाण नहीं दिया जाता।

- **उदाहरण (Example): गीता के अनुसार, ईश्वर सभी के साथ न्यायपूर्ण और समभाव से पेश आता है। "ईश्वर की राह में कर्म करते हुए कोई भी नष्ट नहीं होता" (भगवद गीता, अध्याय 9, श्लोक 22)।**
- **उपणय (Application): यह आयत न्याय दर्शन और गीता के सिद्धांतों के खिलाफ है, जिसमें ईश्वर का उद्देश्य सभी के लिए समान और निष्पक्ष होना है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह केवल अनुमान और विश्वास के आधार पर दया की बात करती है, बिना तर्क और प्रमाण के।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
41	**प्रमेय (Prameya)**	**ऐतिहासिक साक्ष्य के बिना दावा करना।**
42	**व्याप्ति (Vyapti)**	**सामान्यीकरण बिना साक्ष्य के किया गया।**
43	**हेतु (Reason)**	**ईश्वर के पक्षपाती होने का दावा।**
44	**उदाहरण (Udaharana)**	**बिना प्रमाण के दया की अवधारणा।**
45	**प्रमाण (Pramana)**	**अनुमान और विश्वास के आधार पर चेतावनियाँ।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में ईश्वर की शक्ति, न्याय, और दया के बारे में कुछ दावे किए गए हैं, लेकिन ये तर्क और प्रमाण के बिना पेश किए गए हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, कोई भी तर्क जो प्रमाण, अनुभव या स्पष्ट कारणों के बिना दिया जाता है, उसे स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आयत 46
आयत का अनुवाद:
"तो परवाह नहीं करते और उनकी हालत ये है कि जब उनके परवरदिगार की निशानियों में से कोई निशानी उनके पास आयी तो ये लोग मुँह मोड़े बग़ैर कभी नहीं रहे।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि जब लोग अपने परवरदिगार की निशानियों से सामना करते हैं, तो वे उनसे मुँह मोड़ लेते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क केवल यह प्रस्तुत करता है कि लोग ईश्वर के संकेतों की अनदेखी करते हैं, लेकिन यह बिना किसी साक्ष्य या प्रमाण के एक सामान्यीकरण है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से न्याय दर्शन में, यह आवश्यक है कि किसी तर्क को स्वीकार करने से पहले इसका अनुभव और प्रमाण हो। उदाहरण के रूप में, भगवद गीता (अध्याय 9, श्लोक 22) में भगवान ने कहा है, "जो लोग समर्पण और विश्वास के साथ कर्म करते हैं, उनके लिए मैं उनके मार्ग में उपस्थिति और सहायता प्रदान करता हूँ।" इस प्रकार का दृष्टिकोण अधिक तार्किक और न्यायपूर्ण है।**
- **उपणय (Application): यह आयत न्याय दर्शन के प्रमाण सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि इसे बिना किसी ठोस प्रमाण के केवल एक सामान्यीकरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत अनुभव और प्रमाण के बिना अपनी बात रखती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांत के खिलाफ है।**

आयत 47

आयत का अनुवाद:

"और जब उन (कुफ़्फ़ार) से कहा जाता है कि (माले दुनिया से) जो ख़ुदा ने तुम्हें दिया है उसमें से कुछ (ख़ुदा की राह में भी) ख़र्च करो तो (ये) कुफ़्फ़ार ईमानवालों से कहते हैं कि भला हम उस शख़्स को खिलाएँ जिसे (तुम्हारे ख़्याल के मुवाफ़िक़) ख़ुदा चाहता तो उसको ख़ुद खिलाता कि तुम लोग बस सरीही गुमराही में (पड़े हुए) हो।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि काफ़िरों का यह आरोप है कि अगर ईश्वर चाहता तो वह स्वयं दूसरों को भोजन दे सकता था।**
- **हेतु (Reason): यहाँ यह तर्क दिया गया है कि यदि ईश्वर किसी को अपना संदेश देना चाहता है, तो वह खुद उसे क़ीमत और संसाधन दे सकता है।**

- **उदाहरण (Example):** गीता (अध्यक्ष 3, श्लोक 16) में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि, "जो लोग कर्म करते हैं, उनके द्वारा ईश्वर का कार्य होता है।" यह समझाता है कि ईश्वर इंसान को केवल मार्गदर्शन देता है, न कि किसी अन्य रूप में सीधे उपहार देता है।
- **उपणय (Application):** यह तर्क गीता और भारतीय दर्शन के सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है, क्योंकि वहाँ यह माना जाता है कि ईश्वर ने मनुष्यों को स्वतंत्र इच्छाशक्ति दी है और कर्मों का फल स्वयं अर्जित करना पड़ता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत न्याय दर्शन के प्रमाण सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह केवल अवलोकन और विश्वास के आधार पर एक आरोप प्रस्तुत करती है, जबकि भारतीय दर्शन में कर्म और फल का सिद्धांत अधिक प्रमाणिक और तार्किक है।

आयत 48

आयत का अनुवाद:

"और कहते हैं कि (भला) अगर तुम लोग (अपने दावे में सच्चे हो) तो आख़िर ये (क़यामत का) वायदा कब पूरा होगा।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह सवाल उठाया गया है कि यदि क़यामत सच है, तो इसका समय कब आएगा।
- **हेतु (Reason):** यह सवाल क़यामत के वादे की समयावधि पर आधारित है, लेकिन यह प्रश्न एक अपरिभाषित भविष्य पर आधारित है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन, विशेष रूप से वेदांत में, समय और काल की निरंतरता को समझा जाता है। यहाँ कोई निश्चित समय सीमा नहीं होती है, और हर व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार परिणाम मिलता है (भगवद गीता, अध्याय 3, श्लोक 16)।
- **उपणय (Application):** यह आयत निरंतरता और समय के सिद्धांत को समझने में असफल है, क्योंकि यह केवल भविष्य के बारे में ही सवाल करती है, जबकि भारतीय दर्शन में कर्म और समय का समझदारी से विश्लेषण किया गया है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह किसी अज्ञात भविष्य की अनिश्चितता पर आधारित है, जिसे भारतीय दर्शन में न्यायपूर्ण नहीं माना जाता।

आयत 49

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल) ये लोग एक सख़्त चिंघाड़ (सूर) के मुनतज़िर हैं जो उन्हें (उस वक़्त) ले डालेगी।"

चुना गया न्याय तत्व:

व्यास (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि काफ़िर लोग एक कठिन संकट का सामना करेंगे।**
- **हेतु (Reason): यह भविष्य में होने वाली एक निश्चित घटना का उल्लेख करती है, लेकिन यह बिना किसी प्रमाण के एक भय का चित्रण है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में, यदि कोई भविष्य का दावा किया जाए, तो उसे किसी प्रमाण के आधार पर ही स्वीकार किया जा सकता है। गीता में भी कर्मों के अनुसार ही परिणाम मिलने की बात कही जाती है।**
- **उपणय (Application): यह आयत किसी प्रमाण के बिना एक भविष्यवाणी प्रस्तुत करती है, जो भारतीय दर्शन और न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार पर्याप्त नहीं मानी जा सकती।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि बिना ठोस प्रमाण के भविष्यवाणी करना न्यायपूर्ण नहीं माना जाता।**

आयत 50

आयत का अनुवाद:

"जब ये लोग बाहम झगड़ रहे होगें फिर न तो ये लोग वसीयत ही करने पायेंगे और न अपने लड़के बालों ही की तरफ लौट कर जा सकेगें।"

चुना गया न्याय तत्व:

उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि क़यामत के समय लोग अपने रिश्तेदारों से दूर हो जाएंगे और एक दूसरे से लड़ेंगे।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क एक मानसिक अवस्था और विपत्ति का चित्रण करता है, लेकिन इसे किसी प्रमाण या वास्तविक घटना से जोड़ने में असफल है।**

- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, जैसे उपनिषदों में यह कहा गया है कि आत्मा का ज्ञान और कर्म का फल व्यक्ति की स्वतंत्रता और इच्छा पर आधारित है, न कि भविष्य की अनिश्चित घटनाओं पर।
- **उपणय (Application):** यह आयत उपमान के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसे एक असंभव और अपरिभाषित स्थिति का उदाहरण दिया गया है, बिना किसी व्यावहारिक या तार्किक आधार के।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत उपमान के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना साक्ष्य और प्रमाण के एक काल्पनिक स्थिति प्रस्तुत करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
46	हेतु (Reason)	सामान्यीकरण बिना प्रमाण के।
47	प्रमाण (Pramana)	केवल अवलोकन और विश्वास पर आधारित।
48	प्रमेय (Prameya)	भविष्यवाणी के बारे में अज्ञातता।
49	व्याप्ति (Vyapti)	भविष्यवाणी बिना प्रमाण के।
50	उपमान (Upamana)	असंभव और अपरिभाषित स्थिति का उदाहरण।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में विभिन्न भविष्यवाणियाँ और आरोप प्रस्तुत किए गए हैं, लेकिन ये सभी बिना साक्ष्य और प्रमाण के हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, बिना ठोस प्रमाण के कोई भी दावा या भविष्यवाणी स्वीकार नहीं की जा सकती।

आयत 51

आयत का अनुवाद:

"और फिर (जब दोबारा) सूर फूँका जाएगा तो उसी दम ये सब लोग (अपनी-अपनी) क़ब्रों से (निकल-निकल के) अपने परवरदिगार की बारगाह की तरफ चल खड़े होगे।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह दावा करती है कि क़यामत के दिन, सूर फूँके जाने पर सभी लोग अपनी क़ब्रों से निकल कर अपने परवरदिगार की तरफ चल पड़ेंगे।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क एक भविष्यवाणी को प्रस्तुत करता है, जिसमें मनुष्यों की क़ब्रों से उबरने और ईश्वर की ओर चलने का एक काल्पनिक चित्रण किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में कर्म और परिणाम का स्पष्ट सिद्धांत है। जैसे भगवद गीता (अध्याय 2, श्लोक 47) में कहा गया है कि हर व्यक्ति को अपना कर्म करना चाहिए और उसका फल मिलेगा। इस प्रकार, क़यामत के दिन किसी की स्थिति उसके कर्मों पर निर्भर होगी, न कि केवल एक खौफ़नाक दृश्य पर।**
- **उपणय (Application): इस आयत में कर्म और फल के सिद्धांत को पूरी तरह नजरअंदाज किया गया है, जबकि भारतीय दर्शन में यह महत्वपूर्ण है कि किसी की उन्नति या पतन उसके कर्मों पर आधारित है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत न्याय दर्शन के सिद्धांत के विपरीत है, क्योंकि यह बिना ठोस प्रमाण के एक काल्पनिक भविष्यवाणी पेश करती है।**

आयत 52

आयत का अनुवाद:

"और (हैरान होकर) कहेगें हाए अफसोस हम तो पहले सो रहे थे हमें ख़्वाबगाह से किसने उठाया (जवाब आएगा) कि ये वही (क़यामत का) दिन है जिसका ख़ुदा ने (भी) वायदा किया था।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि लोग क़यामत के दिन यह महसूस करेंगे कि वे सो रहे थे, और जब उन्हें उठाया जाएगा तो वे हैरान होंगे।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क एक मानसिक अवस्था और आश्चर्य को चित्रित करता है, लेकिन इसे कोई ठोस प्रमाण या अनुभव से नहीं जोड़ा गया है।**

- **उदाहरण (Example): भगवद गीता (अध्यक्ष 8, श्लोक 25-27) में मृत्यु के बाद आत्मा के एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने का उल्लेख है, जो कर्मों और ज्ञान पर निर्भर करता है, न कि केवल एक अचानक का आश्चर्यजनक अनुभव।**
- **उपणय (Application): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए खड़ी नहीं होती, क्योंकि यह केवल एक मानसिक घटना और आश्चर्य को दिखा रही है, जबकि भारतीय दर्शन में आत्मा के जीवन और मृत्यु के बारे में स्पष्ट और तार्किक विवरण है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना ठोस प्रमाण के एक मानसिक घटना को प्रस्तुत करती है।**

आयत 53

आयत का अनुवाद:
"और पैग़म्बरों ने भी सच कहा था (क़यामत तो) बस एक सख़्त चिंघाड़ होगी फिर एका एकी ये लोग सब के सब हमारे हुज़ूर में हाज़िर किए जाएँगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि पैग़म्बर क़यामत के दिन की भविष्यवाणी करते थे, जिसमें एक सख़्त चिंघाड़ होगी और लोग एकत्र होंगे।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क केवल एक डराने वाली और हिंसक छवि को प्रस्तुत करता है, लेकिन इसे एक अनुभव या प्रमाण से नहीं जोड़ा गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन, विशेष रूप से उपनिषदों और गीता में, जीवन और मृत्यु के बारे में विस्तृत और शांति से भरे सिद्धांत हैं, जिनमें आत्मा की यात्रा और उसके परिणाम को कर्मों से जोड़ा गया है।**
- **उपणय (Application): यह आयत उपमान के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह एक भयभीत करने वाली स्थिति का उदाहरण देती है, जबकि भारतीय दर्शन में यह मान्यता है कि आत्मा की यात्रा शांति और निष्कलंक ज्ञान की ओर होती है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत उपमान के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह केवल डर और हिंसा पर आधारित एक भविष्यवाणी को प्रस्तुत करती है।**

आयत 54

आयत का अनुवाद:

"फिर आज (क़यामत के दिन) किसी शख़्स पर कुछ भी ज़ुल्म न होगा और तुम लोगों को तो उसी का बदला दिया जाएगा जो तुम लोग (दुनिया में) किया करते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में कहा गया है कि क़यामत के दिन किसी पर भी कोई ज़ुल्म नहीं होगा और हर व्यक्ति को उसके कर्मों का फल मिलेगा।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क भारतीय दर्शन के कर्मफल सिद्धांत से मेल खाता है, जो कहता है कि हर व्यक्ति को उसके कर्मों का उचित परिणाम मिलेगा।
- **उदाहरण (Example):** भगवद गीता (अध्यक्ष 4, श्लोक 7-8) में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि जब संसार में अत्याचार बढ़ता है, तो वे अवतार लेकर धर्म की स्थापना करते हैं।
- **उपणय (Application):** यह आयत भारतीय दर्शन के सिद्धांतों के अनुरूप है, जो यह कहते हैं कि कोई भी कर्म निष्कलंक नहीं होता और हर कर्म का फल निश्चित होता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का पालन करती है, क्योंकि यह कर्मफल के सिद्धांत को स्वीकार करती है।

आयत 55
आयत का अनुवाद:
"बेहश्त के रहने वाले आज (रोज़े क़यामत) एक न एक मशग़ले में जी बहला रहे हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि जन्नत में रहने वाले लोग किसी न किसी प्रकार के आनंद में व्यस्त होंगे।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क केवल एक अनुकूल स्थिति का वर्णन करता है, लेकिन इसे किसी प्रमाण या अनुभव से नहीं जोड़ा गया है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से वेदांत में, यह माना जाता है कि आत्मा का वास्तविक सुख परमात्मा के साथ मिलन में है, न कि भौतिक आनंद में।

- **उपणय (Application): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि यह भौतिक आनंद को परम सुख मानती है, जबकि भारतीय दर्शन में वास्तविक सुख आत्मिक उन्नति और आत्मा का परमात्मा के साथ मिलन है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह भौतिक सुख के बजाय आध्यात्मिक उन्नति को महत्व नहीं देती।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
51	**हेतु (Reason)**	**भविष्यवाणी बिना प्रमाण के।**
52	**प्रमेय (Prameya)**	**मानसिक घटना पर आधारित।**
53	**उपमान (Upamana)**	**भय और हिंसा पर आधारित।**
54	**प्रमाण (Pramana)**	**कर्मफल के सिद्धांत को मान्यता देती है।**
55	**प्रमेय (Prameya)**	**भौतिक सुख के स्थान पर आत्मिक उन्नति को नजरअंदाज किया गया।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में क़यामत के दिन होने वाली घटनाओं का एक भयावह और अत्यधिक चित्रण किया गया है। हालांकि आयत 54 ने कर्मफल के सिद्धांत को स्वीकार किया, अधिकांश आयतें बिना साक्ष्य और प्रमाण के भविष्यवाणियाँ प्रस्तुत करती हैं, जो भारतीय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खातीं।

आयत 56
आयत का अनुवाद:
"वह अपनी बीवियों के साथ (ठंडी) छाँव में तकिया लगाए तख़्तों पर (चैन से) बैठे हुए हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत जन्नत में रहने वाले लोगों की सुख-शांति और आराम का चित्रण करती है, जहां वे अपने परिवार के साथ ठंडी छांव में आराम से बैठे होंगे।
- **हेतु (Reason):** इस चित्रण का उद्देश्य जन्नत में उपलब्ध सुखों को दिखाना है, लेकिन यह केवल भौतिक सुख का बयान करता है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन, विशेष रूप से वेदांत, यह मानता है कि वास्तविक सुख आत्मा की मुक्ति में निहित है, जो शांति और आध्यात्मिक समृद्धि के रूप में अनुभव होता है।
- **उपणय (Application):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत के खिलाफ जाती है, क्योंकि यह केवल भौतिक आनंद को महत्वपूर्ण मानती है, जबकि भारतीय दर्शन के अनुसार, वास्तविक आनंद आध्यात्मिक उन्नति और परमात्मा से मिलन में है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह केवल भौतिक सुख पर ध्यान केंद्रित करती है, न कि आध्यात्मिक उन्नति पर।

आयत 57

आयत का अनुवाद:
"बहिश्त में उनके लिए (ताज़ा) मेवे (तैयार) हैं और जो वह चाहें उनके लिए (हाजिर) है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत बताती है कि जन्नत में रहने वालों के लिए ताज़ा फल और उनकी इच्छाओं के अनुसार अन्य भौतिक सुख उपलब्ध होंगे।
- **हेतु (Reason):** यह एक और भौतिक सुख का चित्रण करती है, जो मनुष्यों की इच्छाओं को पूरा करने पर आधारित है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से भगवद गीता में यह कहा गया है कि मनुष्य को इन्द्रिय सुख से ऊपर उठकर आत्मा की शांति और परमात्मा के ज्ञान की ओर अग्रसर होना चाहिए। (भगवद गीता 15:8)
- **उपणय (Application):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि यह भौतिक सुख को सर्वोत्तम मानती है, जबकि भारतीय दर्शन के अनुसार, आत्मिक सुख और ज्ञान से बढ़कर कोई आनंद नहीं है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसमें भौतिक सुख के बजाय आध्यात्मिक उन्नति और शांति की कोई चर्चा नहीं की गई है।

आयत 58

आयत का अनुवाद:

"मेहरबान परवरदिगार की तरफ से सलाम का पैग़ाम आएगा।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि जन्नत में रहने वालों को अल्लाह से सलाम और शांति का संदेश मिलेगा।
- हेतु (Reason): यह तर्क ईश्वर की कृपा और उसके द्वारा दिए गए आशीर्वाद को दर्शाता है।
- उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी यह विचार है कि परमात्मा के साथ मिलन, शांति और आशीर्वाद की स्थिति सर्वोत्तम है, जैसा कि भगवद गीता (9:22) में कहा गया है।
- उपणय (Application): यह आयत भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण से मेल खाती है, क्योंकि शांति और आशीर्वाद की प्राप्ति के लिए ईश्वर से संपर्क करना और आत्मा का उन्नति होना एक साझा सिद्धांत है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत सही है और भारतीय दर्शन के सिद्धांतों से मेल खाती है क्योंकि इसमें शांति और आशीर्वाद की प्राप्ति के महत्व को स्वीकार किया गया है।

आयत 59

आयत का अनुवाद:

"और (एक आवाज़ आएगी कि) ऐ गुनाहगारों तुम लोग (इनसे) अलग हो जाओ।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत गुनाहगारों को जन्नत से अलग करने की बात करती है, यह दर्शाती है कि सज़ा और पुरस्कार का वितरण कर्मों के आधार पर होगा।
- हेतु (Reason): यह तर्क भारतीय दर्शन के कर्मफल सिद्धांत से मेल खाता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों का फल मिलता है।
- उदाहरण (Example): भगवद गीता (9:30) में कहा गया है कि भगवान उन लोगों के कर्मों का फल देते हैं, जो सच्चे दिल से उसके प्रति भक्ति करते हैं।

- **उपणय (Application): यह आयत भारतीय दर्शन के कर्मफल सिद्धांत के अनुसार सही है, क्योंकि इसमें कर्मों के आधार पर पुरस्कार और दंड का वितरण दिखाया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के सिद्धांत के अनुसार तार्किक है, क्योंकि इसमें कर्मफल के सिद्धांत का पालन किया गया है।**

आयत 60

आयत का अनुवाद:

"ऐ आदम की औलाद क्या मैंने तुम्हारे पास ये हुक्म नहीं भेजा था कि (ख़बरदार) शैतान की परसतिश न करना वह यक़ीनी तुम्हारा खुल्लम खुल्ला दुश्मन है।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में अल्लाह ने आदम की संतान को शैतान से बचने और उसकी परसतिश से दूर रहने का आदेश दिया है।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह बताता है कि शैतान से बचना और उसके प्रभाव से बचना हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता (16:23-24) में श्री कृष्ण ने भी असत्य और अन्याय से बचने की बात की है, और सत्य के मार्ग पर चलने का आदेश दिया है।**
- **उपणय (Application): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत से मेल खाती है, क्योंकि इसमें सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने की आवश्यकता को दर्शाया गया है, जो भारतीय दर्शन में भी एक केंद्रीय विचार है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के सिद्धांत के अनुसार सही है, क्योंकि यह सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने का आदेश देती है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
56	प्रमेय (Prameya)	भौतिक सुख के बजाय आध्यात्मिक उन्नति पर ध्यान नहीं दिया गया।
57	प्रमेय (Prameya)	भौतिक सुख का बढ़ा-चढ़ा चित्रण, आध्यात्मिक दृष्टिकोण की कमी।

58	**हेतु (Reason)**	**शांति और आशीर्वाद की आवश्यकता को स्वीकार किया गया।**
59	**प्रमेय (Prameya)**	**कर्मफल के सिद्धांत का पालन किया गया।**
60	**प्रमाण (Pramana)**	**सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने का आदेश।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में मुख्य रूप से भौतिक सुखों का वर्णन किया गया है, जो भारतीय दर्शन में आत्मिक और आध्यात्मिक उन्नति के महत्व को नजरअंदाज करता है। हालांकि, आयत 58, 59 और 60 में कर्मफल और सत्य के मार्ग पर चलने का विचार भारतीय दर्शन से मेल खाता है, अन्य आयतें प्रमेय के सिद्धांत से मेल नहीं खातीं क्योंकि वे भौतिक सुखों को अत्यधिक महत्व देती हैं।

आयत 61
आयत का अनुवाद:
"और ये कि (देखो) सिर्फ मेरी इबादत करना यही (नजात की) सीधी राह है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि केवल अल्लाह की इबादत करना ही सही रास्ता है, जो मुक्ति का कारण बनता है।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क, हालांकि धर्म के एकाधिकारिता पर आधारित है, अन्य धार्मिक परंपराओं की अस्वीकृति करता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन, विशेषकर वेदांत, यह मानता है कि सत्य एक है, लेकिन उसका अनुभव और समझ विभिन्न रास्तों से किया जा सकता है (भगवद गीता 9:22)।**
- **उपणय (Application): यह आयत प्रमण के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि यह केवल एक विशेष रास्ते की ओर संकेत करती है, जबकि भारतीय दर्शन के अनुसार, आत्मा की मुक्ति के लिए कई रास्ते हो सकते हैं।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह धर्म के एकाधिकारिता पर आधारित है, जबकि भारतीय दर्शन में आत्मा के मार्ग का विभिन्न रूपों में पालन किया जाता है।**

आयत 62

आयत का अनुवाद:
"और (बावजूद इसके) उसने तुममें से बहुतेरों को गुमराह कर छोड़ा तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि अल्लाह ने बहुतेरों को गुमराह किया है और क्या हम इस पर विचार नहीं करते।**
- **हेतु (Reason): इस तर्क में यह सिद्ध करने की कोशिश की जाती है कि गुमराही अल्लाह की इच्छाओं का परिणाम है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेषकर वेदांत में, आत्मा के मार्ग को स्वतंत्र इच्छाओं और कर्मों के अनुसार व्यक्त किया जाता है, और कोई भी व्यक्ति अपने कर्मों का फल स्वयं प्राप्त करता है। (भगवद गीता 4:33)**
- **उपणय (Application): यह आयत भारतीय दर्शन के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें यह व्यक्त किया गया है कि गुमराही केवल अल्लाह की इच्छा के तहत होती है, जबकि भारतीय दर्शन में यह कर्मों का परिणाम है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत दोषपूर्ण है, क्योंकि यह कर्मों के सिद्धांत को नजरअंदाज करती है और किसी बाहरी शक्ति की इच्छा को दोष देती है।**

आयत 63

आयत का अनुवाद:
"ये वही जहन्नुम है जिसका तुमसे वायदा किया गया था।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि यह जहन्नुम वह स्थान है जिसकी घोषणा पहले की गई थी।**
- **हेतु (Reason): इसका तर्क यह है कि क़यामत का दिन और उसका परिणाम पहले से निश्चित था।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन के अनुसार, कर्मफल का सिद्धांत यह बताता है कि व्यक्ति के कर्मों के आधार पर उसे फल प्राप्त होता है, और यह परिणाम पहले से निश्चित नहीं होता, बल्कि आत्मा के मार्ग पर उसके कर्मों का ही प्रभाव पड़ता है। (भगवद गीता 4:17)**
- **उपणय (Application): यह आयत कर्मफल के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा और कर्मों के आधार पर परिणामों को निर्धारित नहीं किया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत कर्मफल के सिद्धांत को सही तरीके से नहीं समझती, क्योंकि कर्मों के परिणाम स्वतंत्र रूप से व्यक्ति की इच्छाओं और कर्मों पर निर्भर करते हैं।**

आयत 64

आयत का अनुवाद:
"तो अब चूँकि तुम कुफ्र करते थे इस वजह से आज इसमें (चुपके से) चले जाओ।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि काफिरों को उनके कुफ्र के कारण जहन्नुम में डाल दिया जाएगा।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह सिद्ध करता है कि कुफ्र के कारण लोग जहन्नुम की सजा भुगतेंगे।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेषकर भगवद गीता में यह कहा गया है कि आत्मा अमर है और वह केवल उसके कर्मों और भक्ति के आधार पर पुनः जन्म लेती है, लेकिन कोई सजा नहीं होती। (भगवद गीता 2:13)**
- **उपणय (Application): यह आयत भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें सजा का विचार किया गया है, जबकि भारतीय दर्शन में पुनर्जन्म और कर्मफल का विचार है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण से सही नहीं है, क्योंकि यह सजा की अवधारणा को बढ़ावा देती है, जबकि भारतीय दर्शन में आत्मा का अनुभव और उन्नति प्राथमिक है।**

आयत 65

आयत का अनुवाद:

"आज हम उनके मुँह पर मुहर लगा देगें और (जो) कारसतानियाँ ये लोग दुनिया में कर रहे थे ख़ुद उनके हाथ हमको बता देगें और उनके पाँव गवाही देगें।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह कहा गया है कि काफिरों के मुँह पर मुहर लगा दी जाएगी और उनके हाथ-पाँव उनके कर्मों की गवाही देंगे।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क यह सिद्ध करता है कि लोग अपने कर्मों के बारे में जागरूक होंगे और उनके कार्यों का फल मिलेगा।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में कर्मफल का सिद्धांत भी यही है कि व्यक्ति के कर्मों का फल उसके कार्यों के अनुसार होता है, और यह आत्मा की यात्रा का हिस्सा है। (भगवद गीता 4:33)
- **उपणय (Application):** यह आयत कर्मफल के सिद्धांत के साथ मेल खाती है, क्योंकि यह दिखाती है कि लोगों के कर्मों का ही परिणाम है, जो उनके हाथ-पाँव के द्वारा स्पष्ट होगा।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत भारतीय दर्शन के सिद्धांत से मेल खाती है, क्योंकि इसमें कर्मफल का विवरण दिया गया है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
61	प्रमाण (Pramana)	केवल एक मार्ग को सर्वोत्तम मानने का विचार भारतीय दर्शन से मेल नहीं खाता।
62	हेतु (Reason)	कर्मफल के सिद्धांत को नजरअंदाज करना।
63	हेतु (Reason)	कर्मफल के सिद्धांत का उल्लंघन।
64	हेतु (Reason)	कर्मफल और पुनर्जन्म के सिद्धांत से मेल नहीं खाती।
65	हेतु (Reason)	कर्मफल के सिद्धांत से मेल खाती है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कर्मों के परिणामों और सजा के विषय में विचार किया गया है, लेकिन कई आयतें भारतीय दर्शन के कर्मफल और पुनर्जन्म के सिद्धांत से मेल नहीं खातीं, विशेष रूप से आयत 61 और 62, जो सिर्फ एक मार्ग को सही मानती हैं। आयत 65 में कर्मफल की अवधारणा को स्वीकार किया गया है, जो भारतीय दर्शन से मेल खाती है।

आयत 66
आयत का अनुवाद:
"और अगर हम चाहें तो उनकी आँखों पर झाड़ू फेर दें तो ये लोग राह को पड़े चक्कर लगाते ढूँढते फिरें मगर कहाँ देख पाँएगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि अल्लाह यदि चाहे तो लोगों की आँखों पर झाड़ू फेर सकता है, जिससे वे रास्ता नहीं देख सकेंगे।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह सिद्ध करने का प्रयास करता है कि अल्लाह के पास अपार शक्ति है, जिससे वह मनुष्य की मानसिक और शारीरिक क्षमताओं को बदल सकता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन, विशेष रूप से योग दर्शन में यह माना जाता है कि आत्मा की वास्तविकता और उसकी स्थिति पर निर्भर करता है, न कि बाहरी शक्तियों पर। (पातंजलि योग सूत्र 1.2)**
- **उपणय (Application): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि भारतीय दर्शन में किसी बाहरी शक्ति को व्यक्ति की मानसिक स्थिति पर इतना प्रभाव डालने का अधिकार नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि मनुष्य की मानसिक और शारीरिक क्षमताओं को बाहरी शक्ति से निर्धारित करना भारतीय दर्शन में स्वीकार्य नहीं है।**

आयत 67
आयत का अनुवाद:
"और अगर हम चाहे तो जहाँ ये हैं (वहीं) उनकी सूरतें बदल (करके) (पत्थर मिट्टी बना) दें फिर न तो उनमें आगे जाने का क़ाबू रहे और न (घर) लौट सकें।"

चुना गया न्याय तत्वः
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि अल्लाह यदि चाहे तो किसी के रूप को बदल सकता है, जिससे वह न तो आगे जा सकेगा और न लौट सकेगा।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क एक परम सत्ता की शक्ति को दर्शाता है, जिसमें व्यक्ति के रूप को बदलने की क्षमता को प्रस्तुत किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में रूप और आकार की परिवर्तनशीलता को आत्मा के अनुभव से जोड़ा जाता है, और यह रूप सिर्फ भौतिक दृष्टिकोण से नहीं बदला जा सकता। (सांख्य योग 2.18)**
- **उपणय (Application): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि भारतीय दर्शन में व्यक्ति के रूप का परिवर्तन आत्मा की वास्तविकता के अधीन नहीं होता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि व्यक्ति के रूप में परिवर्तन को केवल बाहरी शक्ति से जोड़ना भारतीय दर्शन के अनुसार ठीक नहीं है।**

आयत 68
आयत का अनुवादः
"और हम जिस शख़्स को (बहुत) ज़्यादा उम्र देते हैं तो उसे ख़िलक़त में उलट (कर बच्चों की तरह मजबूर कर) देते हैं तो क्या वह लोग समझते नहीं।"

चुना गया न्याय तत्वः
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि अल्लाह अगर किसी को लंबी उम्र देता है तो वह व्यक्ति बुजुर्ग होकर बच्चों जैसी अवस्था में वापस चला जाता है।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क शारीरिक और मानसिक स्थितियों की आयु पर निर्भरता को दर्शाता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि शरीर की स्थिति और आयु आत्मा के कर्मों पर निर्भर होती है, और यह प्राकृत रूप से घटता-बढ़ता है। (भगवद गीता 2:14)**
- **उपणय (Application): यह आयत भारतीय दर्शन के सिद्धांत से मेल खाती है, क्योंकि आयु और शारीरिक स्थिति का कर्मों और भौतिक रूप से संबंध हो सकता है।**

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण से सुसंगत है, क्योंकि इसमें शारीरिक परिवर्तन और आयु के प्रभाव को कर्मों और भौतिक रूप से जोड़ा गया है।

आयत 69

आयत का अनुवाद:

"और हमने न उस (पैग़म्बर) को शेर की तालीम दी है और न शायरी उसकी शान के लायक़ है ये (किताब) तो बस (निरी) नसीहत और साफ़-साफ़ क़ुरान है।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह कहा गया है कि पैग़म्बर को शेर या शायरी की तालीम नहीं दी गई है, बल्कि उन्हें सिर्फ नसीहत और कुरान की समझ दी गई है।
- **हेतु (Reason):** इसका तर्क यह है कि पैग़म्बर का उद्देश्य केवल लोगों को नसीहत देना था, और उनकी शिक्षाएँ किसी साहित्यिक रूप में नहीं थीं।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में ज्ञान का उद्देश्य आत्मा की शुद्धि और सत्य की प्राप्ति है, न कि किसी साहित्यिक शैली में कला का प्रदर्शन। (उत्तरा मीमांसा 2.5)
- **उपणय (Application):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत से मेल खाती है, क्योंकि पैग़म्बर का उद्देश्य शिक्षा देना था, जो कि आत्मा की उन्नति के लिए था, न कि कोई साहित्यिक कला।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत से मेल खाती है, क्योंकि यह पैग़म्बर के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से समझाती है।

आयत 70

आयत का अनुवाद:

"ताकि जो ज़िन्दा (दिल आक़िल) हों उसे (अज़ाब से) डराए और काफ़िरों पर (अज़ाब का) क़ौल साबित हो जाए (और हुज्जत बाक़ी न रहे)।"

चुना गया न्याय तत्व:

व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में कहा गया है कि यह कुरान उन लोगों को डराने के लिए है जो जीवित हैं और काफिरों पर अज़ाब साबित करने के लिए है।
- **हेतु (Reason):** इसका तर्क यह है कि कुरान का उद्देश्य चेतावनी देना और काफिरों पर अज़ाब की वास्तविकता को प्रमाणित करना है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में चेतावनी और निर्देश आत्मा के सुधार के लिए होते हैं, न कि किसी सजा के रूप में। (भगवद गीता 3:30)
- **उपणय (Application):** यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि भारतीय दर्शन में चेतावनी का उद्देश्य आत्मा की उन्नति के लिए होता है, न कि किसी अज़ाब के लिए।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें अज़ाब के सिद्धांत को ध्यान में रखा गया है, जो भारतीय दर्शन में नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
66	व्याप्ति (Vyapti)	बाहरी शक्ति से मानसिक और शारीरिक क्षमताओं का परिवर्तन भारतीय दर्शन से मेल नहीं खाता।
67	व्याप्ति (Vyapti)	रूप परिवर्तन को बाहरी शक्ति से जोड़ना भारतीय दर्शन में स्वीकार्य नहीं है।
68	हेतु (Reason)	कर्मफल और शारीरिक परिवर्तन से मेल खाती है।
69	प्रमेयं (Prameya)	पैग़ाम्बर के उद्देश्य को स्पष्ट करता है।
70	व्याप्ति (Vyapti)	चेतावनी का उद्देश्य आत्मा की उन्नति के लिए होता है, न कि किसी अज़ाब के लिए।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रमुख रूप से बाहरी शक्तियों के प्रभाव का जिक्र है, लेकिन भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण से, इसमें मानसिक और शारीरिक क्षमताओं के बाहरी नियंत्रण को एक समस्या के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

आयत 68 कर्मफल के सिद्धांत के साथ मेल खाती है, जबकि अन्य आयतें चेतावनी, रूप परिवर्तन और शारीरिक सुधार के विचारों में भारतीय दर्शन से भिन्न हैं।

न्याय दर्शन के अनुसार तार्किक विश्लेषण

आयत 71

अनुवादः
"क्या उन लोगों ने इस पर भी ग़ौर नहीं किया कि हमने उनके फायदे के लिए चौपाए उस चीज़ से पैदा किए जिसे हमारी ही कुदरत ने बनाया तो ये लोग *(ख्वाहमाख्वाह)* उनके मालिक बन गए।"

न्याय तत्वः

प्रमेय (Prameya) - ज्ञान के विषय

तार्किक विश्लेषणः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में दावा किया गया है कि चौपाए (पशु) अल्लाह की कुदरत से पैदा किए गए हैं और इंसानों के लिए लाभदायक बनाए गए हैं।
- **हेतु (Reason):** इसका आधार यह है कि चौपाए मनुष्यों के लिए सेवक रूप में बनाए गए हैं और वे मनुष्य के स्वामित्व में आते हैं।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन, विशेष रूप से वैशेषिक दर्शन (वैशेषिक सूत्र 1.1.4), यह बताता है कि जीवों की उत्पत्ति प्राकृतिक तत्वों (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) से होती है, न कि किसी ईश्वर की विशिष्ट योजना के तहत।
- **उपनय (Application):** यदि चौपाए किसी विशेष सत्ता द्वारा मनुष्य के लिए बनाए गए होते, तो उनका अस्तित्व केवल मनुष्य के नियंत्रण में होता, जबकि प्रकृति में कई ऐसे जीव हैं जो मनुष्य की आवश्यकता से स्वतंत्र हैं।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमेय के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि भारतीय दर्शन में पशुओं की उत्पत्ति पंचमहाभूतों और उनके कर्मों के अनुसार होती है, न कि किसी विशेष सत्ता के आदेश से।

आयत 72

अनुवादः
"और हम ही ने चौपायों को उनका मुती (आज्ञाकारी) बना दिया तो बाज़ उनकी सवारियां हैं और बाज़ को खाते हैं।"

न्याय तत्वः

व्याप्ति (Vyapti) - अचल नियम

तार्किक विश्लेषणः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह कहा गया है कि चौपायों को मनुष्य के अधीन (आज्ञाकारी) बना दिया गया ताकि वे उन पर सवारी कर सकें और उन्हें खा सकें।
- **हेतु (Reason):** यह कथन मानता है कि चौपायों की अधीनता किसी विशेष ईश्वरीय शक्ति द्वारा तय की गई है।
- **उदाहरण (Example):** संख्या दर्शन कहता है कि प्रकृति के सभी तत्व स्वाभाविक रूप से संतुलन में रहते हैं, और एक जीव का दूसरे पर निर्भर होना एक प्राकृतिक व्यवस्था है, न कि किसी विशेष सत्ता की कृपा। (संख्या कारिका 12)
- **उपनय (Application):** अगर चौपायों की अधीनता किसी ईश्वर की इच्छा से होती, तो कोई भी पशु कभी भी स्वतंत्र रूप से व्यवहार नहीं करता, जबकि ऐसा नहीं है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि प्राकृतिक संबंध और पारिस्थितिकी तंत्र की व्याख्या भारतीय दर्शन में अलग प्रकार से की गई है।

आयत 73

अनुवादः
"और चौपायों में उनके (और) बहुत से फायदे हैं और पीने की चीज़ (दूध) तो क्या ये लोग (इस पर भी) शुक्र नहीं करते?"

न्याय तत्वः

उपमान (Upamana) - तुलनात्मक ज्ञान

तार्किक विश्लेषणः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इसमें दावा किया गया है कि चौपायों का मनुष्य को लाभ पहुँचाने के लिए निर्माण हुआ है और मनुष्य को इसका शुक्रगुज़ार होना चाहिए।
- **हेतु (Reason):** इसमें यह तर्क दिया गया है कि पशु केवल मनुष्य के लिए उपयोगी हैं, जिससे उन्हें किसी दिव्य शक्ति का आभार मानना चाहिए।
- **उदाहरण (Example):** मनुस्मृति *(5.48)* में कहा गया है कि पशु अपने स्वभाव और कर्म के अनुसार व्यवहार करते हैं, वे किसी विशेष ईश्वरीय इच्छा से नहीं चलते।
- **उपनय (Application):** यदि चौपायों का उद्देश्य केवल मनुष्य की सेवा करना होता, तो वे जंगलों में स्वतंत्र रूप से जीवित नहीं रह सकते थे।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत उपमान के न्याय सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि भारतीय दर्शन में प्रत्येक जीव अपनी स्वतंत्र सत्ता और भूमिका रखता है।

आयत 74

अनुवादः
"और लोगों ने ख़ुदा को छोड़कर (फ़र्ज़ी माबूद बनाए हैं ताकि उन्हें उनसे कुछ मदद मिले, हालाँकि वह लोग उनकी किसी तरह मदद कर ही नहीं सकते।"

न्याय तत्वः

हेतु (Hetu) - कारण का सिद्धांत

तार्किक विश्लेषणः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह दावा किया गया है कि मनुष्यों ने अल्लाह को छोड़कर दूसरे माबूद बना लिए हैं जो उनकी कोई मदद नहीं कर सकते।
- **हेतु (Reason):** इसमें यह तर्क दिया गया है कि अल्लाह के अलावा कोई अन्य शक्ति मनुष्यों की सहायता नहीं कर सकती।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय परंपरा में वेदांत दर्शन कहता है कि ईश्वर की पहचान विविध रूपों में हो सकती है और कोई भी एकमात्र सत्ता अंतिम नहीं हो सकती (ब्रह्म सूत्र 1.1.12)।
- **उपनय (Application):** यदि केवल एक ही शक्ति वास्तविक होती, तो दुनिया की विभिन्न संस्कृतियों में अलग-अलग आराध्य देवताओं की मान्यता नहीं होती।

- **निगमन (Conclusion): यह आयत हेतु के सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि भारतीय दर्शन में बहुविध ईश्वरों और उनकी शक्तियों को स्वीकार किया गया है।**

आयत 75

अनुवाद:
"और ये कुफ़्फ़ार उन माबूदों के लशकर हैं (और क़यामत में) उन सबकी हाजिरी ली जाएगी।"

न्याय तत्व:

अनुमान (Anumana) - तर्क द्वारा निष्कर्ष

तार्किक विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह कहा गया है कि जो लोग अल्लाह को नहीं मानते, वे झूठे देवताओं के अनुयायी हैं और क़यामत के दिन उनकी पेशी होगी।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क प्रस्तुत करता है कि जो लोग किसी अन्य शक्ति को पूजते हैं, वे दंड के भागी होंगे।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दृष्टिकोण में कर्मफल का सिद्धांत (गीता 4.17) यह कहता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के अनुसार परिणाम पाता है, न कि किसी एकमात्र ईश्वर के आदेश से।**
- **उपनय (Application): यदि केवल एक विशेष ईश्वर की उपासना ही स्वीकार्य होती, तो विश्व की विविधता और अलग-अलग धर्मों की उपस्थिति व्यर्थ होती।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत अनुमान के न्याय सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि भारतीय दर्शन में कर्म का सिद्धांत स्वतंत्र रूप से कार्य करता है और किसी एक सत्ता द्वारा निर्णय नहीं लिया जाता।**

सारणी: तार्किक आलोचना

आयत संख्या	न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
71	प्रमेय (Prameya)	पशुओं का निर्माण पंचमहाभूतों के सिद्धांत से होता है, किसी

		ईश्वरीय आदेश से नहीं।
72	**व्याप्ति (Vyapti)**	**पशुओं की अधीनता प्रकृति के संतुलन का हिस्सा है, न कि किसी सत्ता की देन।**
73	**उपमान (Upamana)**	**सभी जीव स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में होते हैं, केवल मनुष्य के लिए नहीं।**
74	**हेतु (Hetu)**	**भारतीय दर्शन में विविध देवताओं की स्वीकृति है।**
75	**अनुमान (Anumana)**	**कर्म का सिद्धांत स्वतंत्र रूप से कार्य करता है, किसी एक ईश्वर की इच्छा पर निर्भर नहीं।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में यह धारणा प्रस्तुत की गई है कि मनुष्य के लिए चौपायों की अधीनता और एकमात्र ईश्वर की सर्वोच्चता अनिवार्य सत्य है। भारतीय दर्शन, विशेष रूप से वेदांत, वैशेषिक और संख्या दर्शन, इन अवधारणाओं से असहमत हैं और स्वतंत्र अस्तित्व, कर्म के सिद्धांत, और प्रकृति के संतुलन को प्राथमिकता देते हैं।

न्याय दर्शन के अनुसार तार्किक विश्लेषण

आयत 76

अनुवाद:
"तो (ऐ रसूल) तुम इनकी बातों से आज़ुरदा ख़ातिर (परेशान) न हो जो कुछ ये लोग छिपा कर करते हैं और जो कुछ खुल्लम खुल्ला करते हैं-हम सबको यक़ीनी जानते हैं।"

न्याय तत्व:

अनुमान (Anumana) - तर्क द्वारा निष्कर्ष

तार्किक विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में कहा गया है कि अल्लाह हर चीज़ को जानता है, चाहे वह गुप्त हो या प्रकट।
- **हेतु (Reason):** इसका आधार यह है कि अल्लाह सर्वज्ञ (omniscient) है।
- **उदाहरण (Example):** न्याय दर्शन के अनुसार किसी भी सर्वज्ञ सत्ता का अस्तित्व प्रमाणित करने के लिए प्रत्यक्ष (प्रत्यक्षानुमान), अनुमान (अनुमिति), और अन्य प्रमाण आवश्यक होते हैं।
- **उपनय (Application):** यदि कोई सत्ता हर वस्तु को जानने वाली होती, तो मनुष्य को अपने कर्मों के लिए स्वतंत्रता नहीं मिलती।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत अनुमान के न्याय सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि न्याय दर्शन में किसी भी सर्वज्ञ सत्ता के अस्तित्व को तार्किक प्रमाणों से सिद्ध करना आवश्यक होता है।

आयत 77

अनुवाद:
"क्या आदमी ने इस पर भी ग़ौर नहीं किया कि हम ही ने इसको एक ज़लील नुत्फ़े से पैदा किया फिर वह यकायक *(हमारा ही)* खुल्लम खुल्ला मुक़ाबिल *(बना)* है?"

न्याय तत्व:

हेतु (Hetu) - कारण का सिद्धांत

तार्किक विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में कहा गया है कि मनुष्य एक अपमानजनक तरल (वीर्य) से पैदा हुआ है और फिर वह ईश्वर के विरुद्ध तर्क करने लगता है।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क दिया गया है कि मनुष्य का जन्म एक नगण्य तत्व से हुआ है, इसलिए उसे सृष्टिकर्ता के विरुद्ध नहीं जाना चाहिए।
- **उदाहरण (Example):** सांख्य दर्शन के अनुसार सृष्टि प्रकृति के तीन गुणों (सत्व, रज, तम) के संतुलन से बनती है और किसी बाहरी सत्ता द्वारा नियंत्रित नहीं होती।
- **उपनय (Application):** यदि सृष्टि केवल किसी शक्ति के अधीन होती, तो प्राकृतिक संतुलन बिना किसी कारण के बाधित होता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत हेतु के न्याय सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि भारतीय दृष्टिकोण में सृष्टि स्वतः उत्पन्न होती है और उसकी उत्पत्ति पंचमहाभूतों के नियम से होती है।

आयत 78

अनुवादः
"और हमारी निसबत बातें बनाने लगा और अपनी ख़िलक़त (की हालत) भूल गया और कहने लगा कि भला जब ये हड्डियाँ (सड़गल कर) ख़ाक हो जाएँगी तो (फिर) कौन (दोबारा) ज़िन्दा कर सकता है?"

न्याय तत्वः

प्रमाण (Pramana) - प्रमाण के सिद्धांत

तार्किक विश्लेषणः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इसमें कहा गया है कि मनुष्य पुनर्जन्म को असंभव मानता है, जबकि पुनर्जन्म संभव है।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क दिया गया है कि ईश्वर मृत हड्डियों को पुनः जीवित कर सकता है।
- **उदाहरण (Example):** भगवद गीता *(2.22)* में कहा गया है कि आत्मा अमर है और शरीर बदलता रहता है, लेकिन न्याय दर्शन में पुनर्जन्म कर्मों के आधार पर होता है, न कि किसी विशेष सत्ता के हस्तक्षेप से।
- **उपनय (Application):** यदि मृत शरीर को पुनः उसी रूप में जीवित किया जा सकता होता, तो इसका कोई प्रमाण आज तक नहीं मिला।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण के न्याय सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि पुनर्जन्म का सिद्धांत आत्मा के संचार पर आधारित है, न कि शरीर के पुनः सृजन पर।

आयत 79

अनुवादः
"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि उसको वही ज़िन्दा करेगा जिसने उनको (जब ये कुछ न थे) पहली बार ज़िन्दा कर (रखा)। "

न्याय तत्वः

व्याप्ति (Vyapti) - अचल नियम

तार्किक विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह दावा किया गया है कि जो शक्ति पहली बार जीवन दे सकती है, वही पुनः जीवन दे सकती है।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क दिया गया है कि पूर्व में जीवन देने वाली शक्ति पुनः जीवन देने में सक्षम है।**
- **उदाहरण (Example): वैशेषिक दर्शन के अनुसार सभी पदार्थों का निर्माण पंचतत्त्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) से होता है और इनमें निरंतर परिवर्तन होता रहता है।**
- **उपनय (Application): यदि कोई शक्ति पुनः जीवन प्रदान कर सकती होती, तो मृत शरीर स्वतः पुनः जीवित होते, लेकिन ऐसा कोई प्राकृतिक प्रमाण नहीं मिलता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के न्याय सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि सृष्टि के परिवर्तनशील नियम के तहत शरीर पुनः नहीं बनता।**

आयत 80

अनुवाद:
"और वह हर तरह की पैदाइश से वाकिफ़ है जिसने तुम्हारे वास्ते *(मिखर् और अफ़ार के)* हरे दरख़्त से आग पैदा कर दी फिर तुम उससे *(और)* आग सुलगा लेते हो।"

न्याय तत्व:

उपमान (Upamana) - तुलनात्मक ज्ञान

तार्किक विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह दावा किया गया है कि अल्लाह ने हरे पेड़ों से आग उत्पन्न करने की क्षमता दी।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क दिया गया है कि प्राकृतिक तत्वों में जो परिवर्तन होते हैं, वे ईश्वर की शक्ति से होते हैं।**
- **उदाहरण (Example): वैशेषिक दर्शन कहता है कि पदार्थों में गुण और कर्म के कारण परिवर्तन होते हैं, न कि किसी ईश्वरीय हस्तक्षेप से। (वैशेषिक सूत्र 1.1.5)**
- **उपनय (Application): यदि प्राकृतिक तत्वों में होने वाले परिवर्तन किसी विशेष शक्ति द्वारा नियंत्रित होते, तो वे वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं हो सकते थे।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत उपमान के न्याय सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि भारतीय दृष्टिकोण में प्राकृतिक घटनाएँ प्राकृतिक नियमों के अधीन होती हैं।**

सारणी: तार्किक आलोचना

आयत संख्या	न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
76	**अनुमान (Anumana)**	**सर्वज्ञ सत्ता का कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया।**
77	**हेतु (Hetu)**	**सृष्टि पंचमहाभूतों के संतुलन से बनती है, न कि किसी ईश्वरीय योजना से।**
78	**प्रमाण (Pramana)**	**पुनर्जन्म आत्मा पर आधारित होता है, शरीर के पुनः सृजन पर नहीं।**
79	**व्याप्ति (Vyapti)**	**कोई शक्ति यदि जीवन दे सकती है, तो यह सुनिश्चित नहीं होता कि वह पुनः जीवन दे सके।**
80	**उपमान (Upamana)**	**प्राकृतिक घटनाएँ स्वाभाविक नियमों के अनुसार होती हैं, न कि किसी ईश्वरीय शक्ति से।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में दावा किया गया है कि अल्लाह सर्वज्ञ, सृष्टिकर्ता, और पुनर्जन्म देने वाला है। भारतीय दर्शन इन अवधारणाओं को तर्क और प्रमाणों के बिना स्वीकार नहीं करता। वैशेषिक, सांख्य और न्याय दर्शन के अनुसार, प्रकृति और आत्मा के नियम स्वतः काम करते हैं और किसी बाहरी सत्ता की आवश्यकता नहीं होती।

न्याय दर्शन के अनुसार तार्किक विश्लेषण

आयत 81

अनुवाद:
"भला जिस (ख़ुदा) ने सारे आसमान और ज़मीन पैदा किए क्या वह इस पर क़ाबू नहीं रखता कि उनके मिस्ल (दोबारा) पैदा कर दे? हाँ (ज़रूर क़ाबू रखता है) और वह तो पैदा करने वाला वाक़िफ़कार है।"

न्याय तत्व:

हेतु (Hetu) - कारण का सिद्धांत

तार्किक विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह दावा किया गया है कि जो ईश्वर आकाश और पृथ्वी को उत्पन्न कर सकता है, वह मनुष्य को पुनः जीवित करने की भी शक्ति रखता है।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क दिया गया है कि यदि किसी सत्ता ने पहले सृष्टि की रचना की है, तो वह पुनः भी कर सकती है।
- **उदाहरण (Example):** वैशेषिक दर्शन के अनुसार सृष्टि पंचमहाभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) से बनी है और ये तत्त्व अपनी प्राकृतिक शक्तियों से परिवर्तनशील रहते हैं। किसी सर्वशक्तिमान सत्ता की आवश्यकता नहीं होती।
- **उपनय (Application):** यदि कोई सृष्टिकर्ता होता, तो उसके अस्तित्व का प्रमाण दिया जाना चाहिए, लेकिन ऐसा कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत हेतु के न्याय सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि भारतीय दर्शनों के अनुसार सृष्टि का निर्माण प्राकृतिक नियमों से होता है, न कि किसी अदृश्य शक्ति की इच्छा से।

आयत 82

अनुवाद:
"उसकी शान तो ये है कि जब किसी चीज़ को (पैदा करना) चाहता है तो वह कह देता है कि 'हो जा' तो (फौरन) हो जाती है।"

न्याय तत्व:

व्याप्ति (Vyapti) - अचल नियम

तार्किक विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इसमें कहा गया है कि ईश्वर जब कुछ चाहता है, तो वह बिना किसी प्रक्रिया के तुरंत घटित हो जाता है।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क दिया गया है कि ईश्वर की शक्ति असीमित है और उसकी इच्छा मात्र से कोई भी चीज़ अस्तित्व में आ सकती है।
- **उदाहरण (Example):** न्याय दर्शन के अनुसार किसी भी घटना के घटित होने के लिए कारण (हेतु) और उसके फलस्वरूप प्रभाव (कार्य) का नियम लागू होता है। बिना कारण के कोई वस्तु उत्पन्न नहीं हो सकती।
- **उपनय (Application):** यदि किसी वस्तु का निर्माण मात्र "हो जा" कहने से संभव होता, तो प्रकृति में होने वाले सभी परिवर्तन इसी नियम से होते। परंतु हम देखते हैं कि सभी वस्तुएँ कारण-कार्य संबंध के अधीन होती हैं।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत व्याप्ति के न्याय सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि किसी भी वस्तु के निर्माण के लिए पूर्ववर्ती कारण आवश्यक होता है।

आयत 83

अनुवाद:
"तो वह ख़ुद (हर नफ़्स से) पाक साफ़ है जिसके क़ब्ज़े कुदरत में हर चीज़ की हिकमत है और तुम लोग उसी की तरफ लौट कर जाओगे। "

न्याय तत्व:

अनुमान (Anumana) - तर्क द्वारा निष्कर्ष

तार्किक विश्लेषण:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इसमें कहा गया है कि हर वस्तु ईश्वर के नियंत्रण में है और सभी को अंततः उसी के पास लौटकर जाना है।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क दिया गया है कि यदि ईश्वर के पास हर चीज़ की शक्ति है, तो मृत्यु के बाद सभी उसी के पास लौटते हैं।
- **उदाहरण (Example):** सांख्य दर्शन के अनुसार आत्मा अजर-अमर है और कर्मों के अनुसार पुनर्जन्म लेती है। किसी विशेष सत्ता के पास वापस लौटने का कोई सिद्धांत नहीं है।

- **उपनय (Application): यदि सभी आत्माएँ किसी ईश्वर के पास लौटतीं, तो पुनर्जन्म का सिद्धांत अमान्य हो जाता, लेकिन भारतीय दर्शन पुनर्जन्म को कर्म सिद्धांत से जोड़कर देखता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत अनुमान के न्याय सिद्धांत से मेल नहीं खाती क्योंकि आत्मा का अस्तित्व और उसका गमन केवल ईश्वर पर निर्भर नहीं होता।**

सारणी: तार्किक आलोचना

आयत संख्या	न्याय तत्व	मुख्य आलोचना
81	**हेतु (Hetu)**	**सृष्टि का निर्माण पंचमहाभूतों से होता है, किसी अदृश्य शक्ति से नहीं।**
82	**व्याप्ति (Vyapti)**	**बिना कारण के कोई वस्तु अस्तित्व में नहीं आ सकती।**
83	**अनुमान (Anumana)**	**आत्मा के गमन का नियम केवल ईश्वर पर निर्भर नहीं होता।**

निष्कर्ष:

इन आयतों में यह दावा किया गया है कि ईश्वर ने सृष्टि की रचना की और वह मात्र "हो जा" कहने से कुछ भी उत्पन्न कर सकता है। यह तर्क भारतीय दर्शनों के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता। न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन और सांख्य दर्शन के अनुसार सृष्टि प्राकृतिक नियमों से संचालित होती है, न कि किसी बाहरी शक्ति की इच्छा से।